क.रा.बी.नि. ESIC
सामाजिक सुरक्षा SOCIAL SECURITY

सतलुज धारा

2019-20

कर्मचारी राज्य बीमा निगम

क्षेत्रीय कार्यालय, पंजाब एवं चंडीगढ़

राजभाषा पुरस्कार

अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन, इंदौर, मध्य प्रदेश में माननीय महानिदेशक श्री राजकुमार जी के कर–कमलों से 'ख' क्षेत्र में वर्ष 2018–19 में राजभाषा हिन्दी में श्रेष्ठ कार्यान्वयन के लिए प्रथम पुरस्कार ग्रहण करते हुए श्री राजेश शर्मा, उप निदेशक (राजभाषा), क्षेत्रीय कार्यालय, चण्डीगढ़।

अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन, इंदौर, मध्य प्रदेश में माननीय महानिदेशक श्री राजकुमार जी के कर–कमलों से 'ख' क्षेत्र में स्थित निगम कार्यालयों से प्रकाशित पत्रिकाओं के श्रेष्ठ संपादन के लिए 'सतलुज धारा' के अंक 2018–19 हेतु द्वितीय पुरस्कार ग्रहण करते हुए श्री राजेश शर्मा, उप निदेशक (राजभाषा), क्षेत्रीय कार्यालय, चण्डीगढ़।

सतलुज धारा

2019-20

संरक्षक

आर. गुनसेकरन
अपर आयुक्त-सह-क्षेत्रीय निदेशक

संपादक

राजेश शर्मा
उप निदेशक (राजभाषा)

संपादन सहयोग

अश्वनी कुमार, वरिष्ठ अनुवादक
कृष्णा कुमारी, कनिष्ठ अनुवादक
तृप्ति दीक्षित, कनिष्ठ अनुवादक

पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार लेखकों के निजी विचार हैं। इनसे संपादक मंडल का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। लेखों/रचनाओं की मौलिकता के लिए लेखक/रचनाकार स्वयं उत्तरदायी हैं।

क्षेत्रीय कार्यालय
कर्मचारी राज्य बीमा निगम
पंचदीप भवन, प्लॉट सं.-03, सैक्टर-19ए
मध्य मार्ग, चंडीगढ़-160019

2019-20 सतलुज धारा

अनुक्रमणिका

क्र.	विषय	रचनाकार/संदर्भ	पृष्ठ
1.	संदेश	महानिदेशक, वित्तीय आयुक्त, बीमा आयुक्त, बीमा आयुक्त	i-iv
2.	संरक्षक की कलम से/संपादकीय	आर. गुनसेकरन, राजेश शर्मा	v-vi
3.	हिन्दी टंकण प्रशिक्षण	एक परिचय	1
4.	हिन्दी टंकण प्रशिक्षण-आवश्यक्ता, प्रक्रिया एवं समस्याओं का समाधान	राजेश शर्मा	2
5.	बीमाकृत व्यक्तियों को देय चिकित्सा हितलाभ	चन्द्र भूषण	9
6.	विचार अमृत	एक परिचय	11
7.	'उपनयन' (जनेऊ) संस्कार-अपनी संस्कृति, अपनी पहचान	राजीव दीक्षित	12
8.	सुख और धन दौलत	मनोरमा सांगवान	14
9.	जलियांवाला बाग कांड - शहादत की एक सदी	सुभाष चन्द्र गुप्ता	16
10.	राष्ट्रीय स्वाभिमान और हिन्दी	अजीत कुमार सिंह	18
11.	आत्म विश्वास	गौरव नन्दा	19
12.	मानव की सेवा	निपेन्द्र सिंह कटकवाल	20
13.	कहानी	एक परिचय	21
14.	दस दिन का मेहमान	अश्वनी कुमार	22
15.	मेरी माँ	लवलीन सिंह	24
16.	शेफाली वर्मा-एक प्रेरक जीवनगाथा	तृप्ति दीक्षित	26
17.	शॉर्टकट	महेन्द्र धनिया	28
18.	कविता	एक परिचय	29
19.	कारवां	अमित बहादुर	30
20.	फलसफा जिंदगी का	वकील सिंह	31
21.	देखा बारिश का यो मौसम	संदीप पांचाल	32
22.	खोये हुए लम्हें	जगदीश कुमार गिल	33
23.	ब्रो एण्ड सिस	हर्ष जिंदल	34
24.	हौंसला, वक्त	जगदीश चन्द (सूर्यवंशी)	35
25.	बेटी	रेखा	26
26.	बचपन कहाँ है?	नेहा भारद्वाज	37
27.	यात्रा वृत्तान्त	एक परिचय	38
28.	यूरोप यात्रा - दिल से	साक्षी शर्मा	39
29.	गतिविधियां	एक परिचय	41
30.	गणतंत्र दिवस समारोह 2020 की झलकियाँ	झलकियाँ	42
31.	नौनिहालों की नज़र में - गणतंत्र दिवस	बाल पेंटिंग	43
32.	स्वच्छता ही सेवा कार्यक्रम की झलकियां	झलकियाँ	44
33.	पंजाब एवं चंडीगढ़ क्षेत्र के पेंशनरों के साथ बैठक की झलकियाँ	झलकियाँ	44
34.	हिन्दी कार्यशालाएँ	झलकियाँ	45
35.	अग्निशमन अभ्यास	झलकियाँ	45
36.	बारहवीं आंचलिक खेल कूद प्रतियोगिताओं में प्रतिभागिता	झलकियाँ	46
37.	हमारे खिलाड़ी - कैमरे की नज़र से	गौरवपूर्ण झलकियाँ	47
38.	एसिक पखवाड़ा 2020-स्वास्थ्य जांच व जागरुकता शिविरों का आयोजन	झलकियाँ	48
39.	एसिक पखवाड़ा-प्रेस कवरेज	प्रेस कवरेज	50
40.	राजभाषा गतिविधियां	एक परिवय	51
41.	राजभाषा पखवाड़ा तथा हिन्दी दिवस समारोह का आयोजन	विस्तृत रिपोर्ट	52
42.	विभिन्न प्रोत्साहन योजनाओं/प्रतियोगिताओं का परिणाम	विस्तृत परिणाम	55
43.	हिंदी दिवस समारोह 2019 की झलकियाँ	झलकियाँ	56
44.	नराकास (का.-1) के लिए आयोजित कार्यशाला की झलकियाँ	झलकियाँ	58
45.	आपका पत्र-हमारी प्रेरणा	प्रतिक्रियाएं/शुभकामनाएं	60

कर्मचारी राज्य बीमा निगम
Employees' State Insurance Corporation

पंचदीप भवन, सी.आई.जी. मार्ग, नई दिल्ली–110 002

Panchdeep Bhawan, C.I.G. Marg, New Delhi-110 002

WEBSITE : www.esic.nic.in • www.esic.india.org

अनुराधा प्रसाद (भा.रा.ले.से.)
महानिदेशक

संदेश

यह हर्ष का विषय है कि क्षेत्रीय कार्यालय, पंजाब अपनी गृह पत्रिका **'सतलुज धारा'** के वर्ष 2019–2020 अंक का प्रकाशन शीघ्र ही करने जा रहा है। क्षेत्र में कर्मचारी राज्य बीमा निगम की नीतियों को बीमाकृत व्यक्ति तक पहुँचाने में राजभाषा हिंदी का अतुल्य योगदान रहा है। गृह पत्रिका केवल कार्मिकों की मौलिक सृजनशीलता, रचनात्मक व कलात्मक अभिरूचि में संवर्धन का ही नहीं बल्कि निगम की विभिन्न गतिविधियों एवं क्रियाकलापों को समेकित रूप प्रदान करने का एक सार्थक मंच भी है।

निगम इकाइयों द्वारा प्रकाशित गृह पत्रिकाओं में संपादन की दृष्टि से **'सतलुज धारा'** निःसंदेह अपना विशिष्ट स्थान रखती है। प्रशंसनीय है कि **'सतलुज धारा'** निगम मुख्यालय तथा नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा पुरस्कृत होती रही है। आशा करती हूँ कि पत्रिका अपनी अनवरत यात्रा जारी रखेगी।

गृह पत्रिका **'सतलुज धारा'** के आगामी अंक के सफल प्रकाशन हेतु मेरी शुभकामनाएं।

(अनुराधा प्रसाद)

कर्मचारी राज्य बीमा निगम
Employees' State Insurance Corporation
पंचदीप भवन, सी.आई.जी. मार्ग, नई दिल्ली–110 002

Panchdeep Bhawan, C.I.G. Marg, New Delhi-110 002

WEBSITE : www.esic.nic.in • www.esic.india.org

संध्या शुक्ला (भा.ले. एवं ले.से.)
वित्तीय आयुक्त

संदेश

यह जानकर प्रसन्नता हुई कि क्षेत्रीय कार्यालय, पंजाब अपनी गृह पत्रिका **'सतलुज धारा'** के वर्ष 2019–2020 अंक का प्रकाशन शीघ्र ही करने जा रहा है। क्षेत्र में कर्मचारी राज्य बीमा अधिनियम की नीतियों को बीमाकृत व्यक्ति तक पहुँचाने में राजभाषा हिंदी का विशेष योगदान है। गृह पत्रिका का प्रकाशन अपने आप में ही एक अनूठा प्रयास होता है जिसमें संपादक मंडल की मेहनत तो स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ती ही है साथ ही क्षेत्र विशेष के कार्मिकों की मनस्विता एवं मौलिक सृजनशीलता का बोध भी होता है। पंजाब क्षेत्र में राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन के प्रति निष्ठा के लिए सभी अधिकारी एवं कर्मचारी प्रशंसा के पात्र हैं।

मैं आशा करती हूं कि पंजाब क्षेत्र के कार्मिक अपने उत्कृष्ट लेखों के द्वारा **'सतलुज धारा'** के प्रकाशन में निरंतर एवं सार्थक योगदान देते रहेंगे।

'सतलुज धारा' के आगामी अंक के सफल प्रकाशन हेतु शुभकामनाएं।

संध्या

(संध्या शुक्ला)

कर्मचारी राज्य बीमा निगम
Employees' State Insurance Corporation
पंचदीप भवन, सी.आई.जी. मार्ग, नई दिल्ली–110 002
Panchdeep Bhawan, C.I.G. Marg, New Delhi-110 002
WEBSITE : www.esic.nic.in • www.esic.india.org

एम.के. शर्मा
बीमा आयुक्त (राजभाषा)

संदेश

यह हर्ष का विषय है कि क्षेत्रीय कार्यालय, पंजाब अपनी गृह पत्रिका **'सतलुज धारा'** का निरंतर प्रकाशन कर रहा है। निश्चित ही पत्रिका प्रकाशन उस क्षेत्र विशेष के कार्मिकों का एक सामूहिक प्रयास होता है जिसे वे अपनी सृजनशीलता एवं कलात्मक अभिव्यक्ति के माध्यम से मूर्त रूप प्रदान करते हैं। श्रेष्ठ संपादन की दृष्टि से **'सतलुज धारा'** विभिन्न मंचों से पुरस्कार प्राप्त करती रही है। क्षेत्रीय कार्यालय, पंजाब के कार्मिकों की मेहनत भी इसमें स्पष्ट परिलक्षित होती है।

आशा है गृह पत्रिका **'सतलुज धारा'** राजभाषा हिंदी के प्रति कार्मिकों में एक सकारात्मक ऊर्जा का दीप प्रज्जवलित रखेगी तथा विगत अंकों की भांति यह अंक भी सफल होगा।

(एम.के. शर्मा)

कर्मचारी राज्य बीमा निगम
Employees' State Insurance Corporation
पंचदीप भवन, सी.आई.जी. मार्ग, नई दिल्ली–110 002
Panchdeep Bhawan, C.I.G. Marg, New Delhi-110 002
WEBSITE : www.esic.nic.in • www.esic.india.org

पी.बी. मणी
बीमा आयुक्त (कार्मिक एवं प्रशासन)

संदेश

यह जानकर अत्यधिक प्रसन्नता हुई कि क्षेत्रीय कार्यालय, पंजाब अपनी गृह पत्रिका **'सतलुज धारा'** के अगले अंक का प्रकाशन करने जा रहा है। मेरा विश्वास है कि गृह पत्रिका राजभाषा कार्यान्वयन के अलावा निगम की नीतियों के प्रचार–प्रसार का भी एक सार्थक मंच होती है। किसी क्षेत्र की पत्रिका उस क्षेत्र की वर्षभर की विभिन्न गतिविधियों का सुंदर संग्रह तो होती ही है साथ ही उस क्षेत्र में तैनात अधिकारियों और कर्मचारियों की सामाजिक एवं सांस्कृतिक पहलुओं के प्रति उनकी भावाभिव्यक्ति से पाठकों को अवगत कराती है तथा ज्ञानवर्धन करती है। आशा है **'सतलुज धारा'** का यह अंक अपनी गरिमा के अनुकूल संग्रहणीय होगा।

'सतलुज धारा' के सफल प्रकाशन के लिए संपादक मंडल और पंजाब क्षेत्र के कार्मिकों को मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

(पी.बी. मणी)

संरक्षक की कलम से...

क्षेत्रीय निदेशक, पंजाब का कार्यभार ग्रहण करने के पश्चात् मेरे संरक्षण में **'सतलुज धारा'** का वर्ष 2019–20 का यह अंक आपके हाथों में सौंपते हुए मुझे अतीव हर्ष की अनुभूति हो रही है। मैंने अपने इस आंशिक कार्यकाल में प्रत्यक्ष तौर पर यह अनुभव किया है कि 'ख' क्षेत्र में स्थित होने के उपरांत भी क्षेत्रीय कार्यालय, पंजाब में तैनात सभी कार्मिक हिंदी में बोलने में सहज महसूस करते हैं तथा अपना अधिकांश कार्यालयीन कार्य भी हिंदी में ही निष्पादित करते हैं। काफी अच्छा लगा। राजभाषा नीति का सम्मान करना व अपने कार्यव्यवहार में हिंदी का प्रयोग करना हमारी नैतिक एवं संवैधानिक जिम्मेदारी भी है। मेरा यह मत है कि मूल आलेखन कार्य एक ऐसी साधना है जो मनुष्य के व्यक्तित्व में सकारात्मक ऊर्जा का संचार करती है। यही सृजनशीलता किसी भी कार्य के निष्पादन में बहुमुखी चिंतन को विकसित करती है तथा सार्थक निर्णय लेने में हमें सक्षम बनाती है। यह कार्य कल्पनाशीलता, अनुशासन एवं सौंपे गए कार्य के प्रति समपर्ण के भाव भी उत्सर्जित करती है। राजभाषा के साथ–साथ क्षेत्रीय कार्यालय, पंजाब के अधिकारियों/कर्मचारियों का कर्मचारी राज्य बीमा अधिनियम के प्रभावी कार्यान्वयन तथा गैर–कार्यान्वित क्षेत्रों में अधिनियम के प्रचार–प्रसार एवं बीमाकृत व्यक्तियों के प्रति समर्पित यही सेवाभाव इस बात का द्योतक है कि आज पंजाब क्षेत्र की गणना देश के अग्रणी क्षेत्रों में की जाती है। इसके लिए क्षेत्रीय कार्यालय के सभी अधिकारियों/कर्मचारियों की मैं मुक्त कंठ से सराहना करता हूँ।

'सतलुज धारा' के वर्ष 2019–20 के इस अंक हेतु बहुमूल्य, अविस्मरणीय एवं ज्ञानवर्धक रचनाओं के लिए सभी रचनाकारों का हार्दिक अभिनंदन एवं संपादक मंडल के सक्रिय योगदान के प्रति अपना आभार व्यक्त करता हूँ।

मैं आशा करता हूँ कि गृह पत्रिका **'सतलुज धारा'** का यह अंक अपने पाठकों की अपेक्षाओं पर खरा उतरेगा तथा पत्रिका अपनी यात्रा अविराम जारी रखेगी।

आर. गुनसेकरन
अपर आयुक्त–सह–क्षेत्रीय निदेशक

संपादक की कलम से...

मनुष्य, समाज और संस्कृति का आपस में अटूट नाता है तथा इनके सतत् सर्वांगीण विकास में भाषा ने निःसंदेह अहम् भूमिका निभाई है या यूं कहें कि भाषा ही समाज और संस्कृति के विकास का मूल है तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। मनुष्य ने जब पहले शब्द का उच्चारण किया और दूसरे मनुष्य ने इसे समझा तो शायद विकासक्रम का वही पहला ऐतिहासिक पड़ाव था।

भाषा की उत्पत्ति के उपरांत ही अनुभवों से प्राप्त ज्ञान के आदान–प्रदान की प्रक्रिया का प्रादुर्भाव हुआ। वास्तविकता भी यही है कि बुद्धिजीवियों से प्राप्त ज्ञान को अपने में आत्मसात् कर नए विचारों का सृजन तथा उत्सर्जित नूतन विचारों से उठाए गए सकारात्मक सामाजिक, सांस्कृतिक और वैज्ञानिक कदम ही तो हमारे विकास के मूल को संचित करते हैं। विचारों की उत्पत्ति एवं आदान–प्रदान के लिए भाषा ही एकमात्र साधन है।

भौगोलिक संरचना के आधार पर अनेक बोलियों और भाषाओं का विकास हुआ। कालांतर में विकासक्रम रूपी रथ के पहियों को भाषारूपी बाधा से मुक्त रखने के लिए सार्वभौमिक भाषा की आवश्यकता महसूस हुई। ऐसे में भारत जैसे बहुभाषी देश में जहां क्षेत्रीय भाषाओं की अस्मिता और सम्मान का प्रश्न था, वहीं देश को एक सूत्र में पिरोने के लिए हिंदी को राजभाषा का विशिष्ट स्थान दिलवाया जाना भी अनिवार्य था। हमारे मनीषियों द्वारा देश की सम्प्रभुता और अखण्डता को बनाए रखने के लिए राजभाषा हिंदी के चयन के फलस्वरूप ही आज हिंदी संपूर्ण देश में राजकीय कामकाज की भाषा होने के साथ–साथ देश के सभी राज्यों में बोली और समझी जाने लगी है। हिंदी निःसंदेह हमारी क्षेत्रीय भाषाओं के बीच एक सेतु के दायित्व का निर्वहन करने में सफल रही है।

वर्तमान में वैश्विक वाणिज्यिक परिस्थितियों के चलते हिंदी का वैश्विक मानचित्र पर भी वृहत् विकास हुआ है तथा विदेशों में भी हिंदी के पठन–पाठन की आवश्यकता समझी जाने लगी है। ऐसे में राजभाषा हिंदी के विकास और उसकी प्रगति के लिए समर्पित भाव से अपना योगदान देने के प्रति हम सब भारतीयों का दायित्व और अधिक बढ़ जाता है। अतः राजभाषा हिंदी के प्रति सांविधिक एवं नैतिक दायित्व को निभाते हुए हमें संपूर्ण राजकीय कामकाज को हिंदी में ही सुदृढ़ता के साथ निष्पादित करना चाहिए।

क्षेत्रीय कार्यालय, कर्मचारी राज्य बीमा निगम, पंजाब एवं चंडीगढ़ में तैनात सभी अधिकारी एवं कर्मचारी सदैव ही राजभाषा के प्रति सजग रहे हैं तथा कार्यालयी कार्य में हिंदी का प्रयोग एवं राजभाषा नियमों/अनुदेशों का निष्ठा से पालन करते हैं। सभी अधिकारी एवं कर्मचारी इसके लिए प्रशंसा के पात्र हैं। क्षेत्रीय कार्यालय को निगम मुख्यालय, दिल्ली, नराकास, चंडीगढ़ तथा राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा समय–समय पर उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन तथा गृह पत्रिका **'सतलुज धारा'** के उत्कृष्ट प्रकाशन के लिए पुरस्कृत किया जाता रहा है। गत वर्ष भी मुख्यालय द्वारा क्षेत्रीय कार्यालय, चंडीगढ़ को कार्यान्वयन के क्षेत्र में प्रथम पुरस्कार तथा **'सतलुज धारा'** के उत्कृष्ट प्रकाशन के लिए द्वितीय पुरस्कार प्रदान किया गया है।

इन उपलब्धियों के लिए मैं व्यक्तिगत तौर पर क्षेत्रीय कार्यालय में तैनात सभी अधिकारियों/कर्मचारियों का उनके सक्रिय सहयोग के लिए आभार व्यक्त करता हूँ। **'सतलुज धारा'** के वर्ष 2019–2020 अंक के लिए ज्ञानवर्धक एवं स्तरीय रचनाएं उपलब्ध करवाने के लिए भी मैं सभी रचनाकारों का हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ।

'सतलुज धारा' के पिछले अंक पर हमें पाठकों की प्रतिक्रियाएं प्राप्त हुई। आपकी प्रतिक्रियाओं तथा मार्गदर्शन के लिए धन्यवाद। आशा है आप अपने नूतन विचारों से हमारा मार्गदर्शन करते रहेंगे। **'सतलुज धारा'** का यह अंक आपकी अपेक्षाओं पर खरा उतरेगा, ऐसी मेरी कामना है। आपके मार्गदर्शन/प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा में.....

राजेश शर्मा
उप निदेशक (राजभाषा)

हिन्दी टंकण प्रशिक्षण

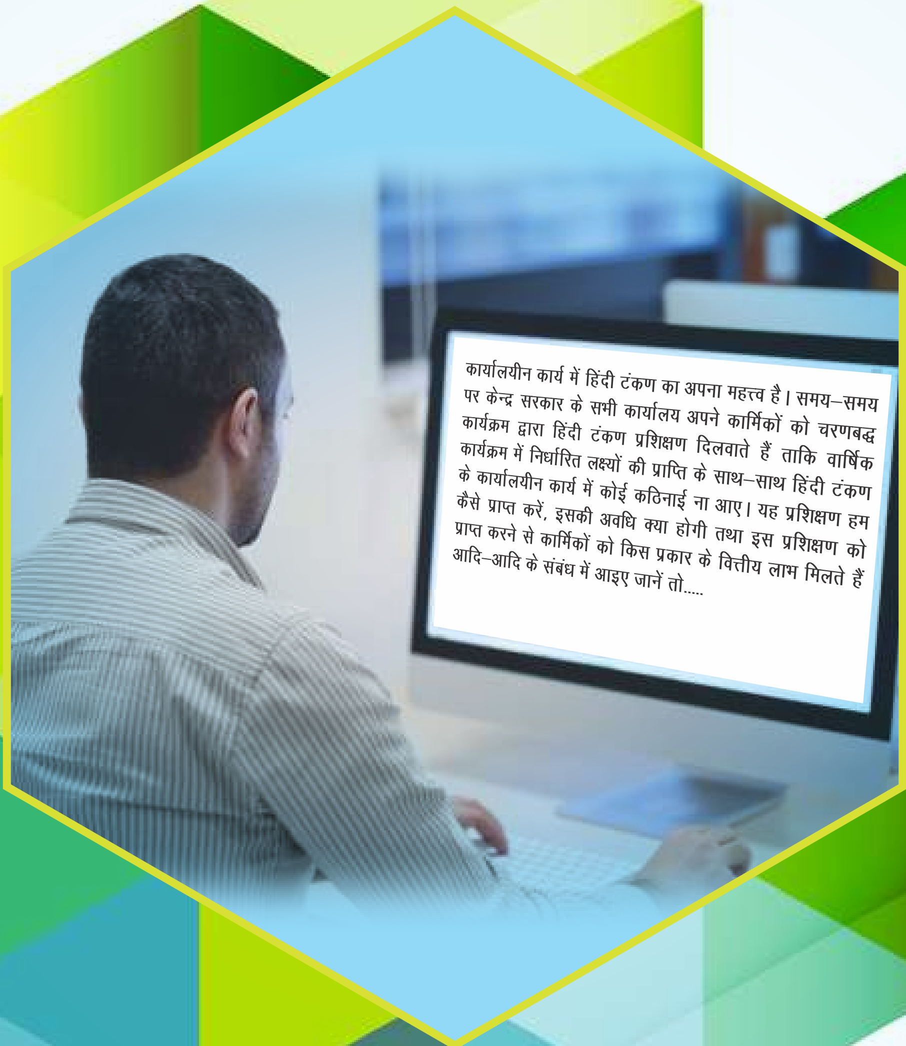

राजेश शर्मा
उप निदेशक (राजभाषा)

हिन्दी टंकण प्रशिक्षण
आवश्यकता, प्रक्रिया एवं समस्याओं का समाधान

देशभर के केंद्र सरकार के सभी मंत्रालयों/विभागों तथा उनके संबद्ध तथा अधीनस्थ कार्यालयों आदि को या तो कंप्यूटरीकृत कर दिया गया है या किया जा रहा है। आज कंप्यूटर आदि सूचना प्रौद्योगिकी उपकरणों के बिना कार्यालयों में कार्य की कल्पना कठिन है। सूचना प्रौद्योगिकी के इन उपकरणों का प्रयोग बिना टंकण के संभव नहीं है। सामान्यतः सभी प्रकार का पत्राचार भी टंकित करके ही किया जा रहा है, चाहे पत्र बनाकर प्रिन्ट लिया जाए, किसी मॉड्यूल के माध्यम से काम किया जाए या ई–मेल आदि का प्रयोग किया जाए।

भारत सरकार की राजभाषा नीति के अनुरूप उपर्युक्त सभी कार्यालयों में निर्धारित न्यूनतम प्रतिशतता में हिन्दी में काम करना अनिवार्य है। सामान्यतः सभी उपकरणों में हिन्दी में काम करने की सुविधा उपलब्ध होती है। अतः ऐसे कार्मिकों को जिनसे टंकण कार्य अपेक्षित है, उन्हें हिन्दी टंकण का ज्ञान होना भी अति आवश्यक है। इसलिए राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार के निदेशानुसार केंद्र सरकार के सभी मंत्रालयों, विभागों तथा उनके संबद्ध तथा अधीनस्थ कार्यालयों/केंद्र सरकार के स्वामित्व अथवा केंद्र सरकार के नियंत्रणाधीन सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों/सांविधिक निकायों/उद्यमों/अभिकरणों/निगमों तथा राष्ट्रीयकृत बैंकों में कार्यरत ऐसे सभी कर्मचारियों को हिन्दी टंकण का प्रशिक्षण दिलवाने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है जिनसे टंकण कार्य अपेक्षित है।

1. प्रशिक्षण की अनिवार्यता–

उपर्युक्त कार्यालयों के सभी अंग्रेजी टंककों, कनिष्ठ सचिवालय सहायकों, अवर श्रेणी लिपिकों, डाक विभाग के डाक सहायकों एवं कार्यालय सहायकों, रेल डाक सेवा में छंटाई सहायकों, कार्यालय सहायकों, दूरसंचार विभाग में दूरसंचार सहायकों, आयकर तथा कस्टम एवं एक्साइज विभाग में कर सहायकों, विभिन्न मंत्रालयों/विभागों/कार्यालयों में कंप्यूटर ऑपरेटरों, डाटा एंट्री ऑपरेटरों आदि तथा ग्रुप–सी (वर्ग–ग) के उन अन्य सभी कर्मचारियों के लिए, जो इसी प्रकृति का कार्य करते हैं तथा उनसे टंकण कार्य अपेक्षित है, हिन्दी टंकण का प्रशिक्षण अनिवार्य है।

क.रा.बी. निगम कार्यालयों के सभी प्रवर/अवर श्रेणी लिपिकों/टंककों, आशुलिपिकों तथा बहुकार्य स्टाफ को हिन्दी टंकण प्रशिक्षण दिलवाया जाना अनिवार्य है ताकि हिन्दी में कार्य के लिए उनकी सेवाओं का इष्टतम उपयोग किया जा सके।

2. स्वैच्छिक/वैकल्पिक प्रशिक्षण –

वर्तमान में सहायकों, सहायक अनुभाग अधिकारियों, वरिष्ठ सचिवालय सहायकों तथा कनिष्ठ/वरिष्ठ अनुवादकों/अनुवाद अधिकारियों के लिए हिंदी शब्द संसाधन/हिंदी टंकण का प्रशिक्षण अनिवार्य नहीं है तथापि इन्हें आवश्यकतानुसार स्वैच्छिक/वैकल्पिक आधार पर हिंदी शब्द संसाधन/हिंदी टंकण प्रशिक्षण दिलवाया जा सकता है और कक्षाओं में रिक्त स्थान होने पर प्रवेश मिल सकता है। टंकण परीक्षा उत्तीर्ण करने पर ये सभी प्रकार के वित्तीय लाभों के हकदार होंगे।

अन्य सभी अधिकारियों/कर्मचारियों जिनके लिए यह प्रशिक्षण अनिवार्य तो नहीं किन्तु उपयोगी है, उन्हें भी आवश्यकतानुसार स्वैच्छिक/वैकल्पिक आधार पर हिन्दी टंकण प्रशिक्षण दिलवाया जा सकता है और कक्षाओं में रिक्त स्थान होने पर प्रवेश मिल सकता है, परंतु टंकण परीक्षा उत्तीर्ण करने पर वे किसी भी प्रकार के वित्तीय लाभों के हकदार नहीं होंगे।

टिप्पण–आलेखन का कार्य करने वाली सभी शाखाओं/प्रभागों/विभागों के अधीक्षक/पर्यवेक्षक तथा शाखा अधिकारी/विभागाध्यक्ष विराकास के सदस्य होते हैं।

3. प्रशिक्षण के लिए कार्मिकों का चयन –

क) रोस्टर के अनुरूप हिन्दी टंकण प्रशिक्षण के लिए शेष कर्मचारियों की सूची तैयार करें।

ख) चरणबद्ध कार्यक्रम बनाकर केंद्रीय हिन्दी प्रशिक्षण संस्थान/हिन्दी शिक्षण योजना के दीर्घकालिक/अल्पकालिक/वैलिडेशन/पत्राचार/प्राइवेट परीक्षा कार्यक्रम के हिन्दी टंकण/हिन्दी शब्द संसाधन (कंप्यूटर) प्रशिक्षण पाठ्यक्रम में नामित करें।

ग) कार्यक्रम बनाते समय टंकण प्रशिक्षण के लिए प्रवर/अवर श्रेणी लिपिकों/टंककों तथा आशुलिपिकों को प्राथमिकता प्रदान करें, तत्पश्चात् बहुकार्य स्टाफ तथा उसके पश्चात् आवश्यकतानुसार अन्य अधिकारियों/कर्मचारियों को भी प्रशिक्षण दिलवाया जा सकता है। कनिष्ठ/वरिष्ठ अनुवादकों/अनुवाद अधिकारियों को भी यथासमय प्रशिक्षण के लिए नामित किया जा सकता है।

घ) हिंदी टंकण प्रशिक्षण के लिए कार्मिकों की अधिकतम आयु 59 वर्ष निर्धारित की गई है। अतः 59 वर्ष से अधिक आयु के कार्मिकों को प्रशिक्षण के लिए नामित न किया जाए।

ङ) उपर्युक्त प्रत्येक प्रशिक्षण कार्यक्रम में हिन्दी टंकण प्रशिक्षण केवल भारत सरकार द्वारा निर्धारित मानक इन्स्क्रिप्ट की–बोर्ड पर ही दिया जाता है तथा परीक्षा भी केवल इन्स्क्रिप्ट की–बोर्ड के द्वारा ही ली जाती है। अतः प्रत्येक प्रशिक्षार्थी को केवल इसी की–बोर्ड पर अभ्यास करना चाहिए।

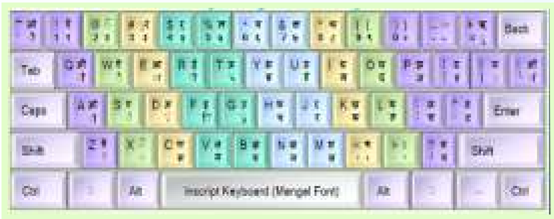

4. पात्रता–

क) प्रशिक्षण के किसी भी कार्यक्रम में केवल उन्हीं अधिकारियों/कर्मचारियों को नामित करें जिन्होंने पहले किसी भी प्रकार का टंकण प्रशिक्षण प्राप्त न किया हो। हिन्दी टंकण प्रशिक्षण सेवाकाल में केवल एक बार लिया जाना अपेक्षित है, चाहे वह निम्नलिखित में से किसी भी टंकण प्रशिक्षण कार्यक्रम के माध्यम से लिया गया हो।

ख) प्रशिक्षण के लिए नामित करने हेतु कार्मिकों का चयन कार्यालय द्वारा अपनी आवश्यकता, सुविधा, प्राथमिकता एवं हिन्दी टंकण प्रशिक्षण के लिए अपेक्षित शेष कार्मिकों की उपलब्धता आदि के आधार पर किया जाता है, तथापि 'अनिवार्य प्रशिक्षण के लिए शेष' कार्मिकों को प्राथमिकता के आधार पर नामित करके प्रशिक्षण संबंधी लक्ष्य को पूरा करना अपेक्षित है।

5. प्रवेश के लिए अर्हक हिन्दी योग्यता– हिन्दी विषय के साथ मिडिल (आठवीं) या इसके समकक्ष कोई अन्य परीक्षा, जैसे–हिन्दी शिक्षण योजना के अंतर्गत प्रवीण परीक्षा, उत्तीर्ण की हो।

6. प्रशिक्षण कार्यक्रम: उपर्युक्त कार्यालयों के सभी अपेक्षित कार्मिकों को टंकण प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए राजभाषा विभाग के केंद्रीय हिन्दी प्रशिक्षण संस्थानों/हिन्दी शिक्षण योजना द्वारा कई प्रकार के टंकण प्रशिक्षण कार्यक्रम तैयार किए गए हैं। ये सभी प्रशिक्षण प्रायः समकक्ष हैं तथा प्रत्येक कार्यालय अपनी आवश्यकता, सुविधा, प्राथमिकता एवं हिन्दी टंकण प्रशिक्षण के लिए अपेक्षित शेष कार्मिकों की उपलब्धता आदि के अनुसार इनमें से किसी भी कार्यक्रम/पाठ्यक्रम के माध्यम से कार्मिकों को हिन्दी टंकण प्रशिक्षण दिलवा सकता है। इन कार्यक्रमों/पाठ्यक्रमों के विस्तृत विवरण निम्नानुसार हैं–

क) दीर्घकालिक प्रशिक्षण– यह एक नियमित प्रशिक्षण कार्यक्रम है। प्रतिदिन केवल एक घंटा परंतु छह माह तक चलने वाला यह कार्यक्रम सबसे लंबी अवधि का टंकण प्रशिक्षण कार्यक्रम है, इसीलिए इसे दीर्घकालिक प्रशिक्षण कहा गया है।

1) प्रशिक्षण अवधि: छह माह, एक घंटा प्रतिदिन।

2) सत्र: वर्ष में दो सत्र

क्रमांक	सत्र	नामांकन	परीक्षा
1	फरवरी से जुलाई	दिसम्बर–जनवरी	जुलाई
2	अगस्त से जनवरी	जून–जुलाई	जनवरी

3) प्रवेश प्रक्रिया–

(1) कार्मिकों के नामांकन निर्धारित प्रपत्र में भरकर निकटतम प्रशिक्षण केंद्र से संपर्क करें।

(2) प्रवेश **"पहले आओ, पहले पाओ"** आधार पर होता है, तथापि अनिवार्य प्रशिक्षण श्रेणी के कार्मिकों को प्राथमिकता दी जाती है तथा इनमें से भी पहली प्राथमिकता अधिक आयु के कार्मिकों को दी जाती है।

(3) नामित कार्मिकों को नियत तिथि पर व्यक्तिगत रूप से प्रशिक्षण केंद्र पर उपस्थित होना होगा। उपर्युक्त शर्त प्रवेश के लिए कार्मिकों की व्यक्तिगत रूप से उपस्थिति तथा सीटों के उपलब्ध रहने तक ही लागू होगी।

ख) अल्पकालिक गहन प्रशिक्षण – यह भी एक नियमित प्रशिक्षण कार्यक्रम है। यह कार्यक्रम केवल 40 पूर्ण कार्यदिवस में पूर्ण हो जाता है। अल्पकाल में टंकण प्रशिक्षण पूर्ण होने के कारण ही इसे अल्पकालिक गहन प्रशिक्षण कहा जाता है।

1) प्रशिक्षण अवधि – 40 पूर्ण कार्यदिवसीय नियमित कक्षाएँ (प्रातः 9.30 बजे से सायं 6.00 बजे तक)।

2) सत्र– वर्ष में पाँच सत्र

क्रमांक	सत्र	नामांकन	परीक्षा
1	जनवरी से मार्च	पूर्ववर्ती वर्ष के अक्तूबर से दिसम्बर माह में आगामी वर्ष के कार्यक्रमों के लिए नामांकन किए जाते हैं।	प्रत्येक सत्र की समाप्ति पर
2	मार्च से मई		
3	जून से जुलाई		
4	अगस्त से अक्तूबर		
5	अक्तूबर से दिसम्बर		

प्रशिक्षण सत्रों की संख्या प्रशिक्षण केंद्र की क्षमता अनुसार कम भी हो सकती है।

3) केवल उन्हीं अधिकारियों/कर्मचारियों को नामित किया जाए, जिन्हें प्रशिक्षण अवधि के लिए कार्यालय से कार्यमुक्त किया जा सके।

4) पाठ्यक्रम में प्रवेश लेने के पश्चात् प्रशिक्षण केंद्र द्वारा किसी भी परिस्थिति में कार्मिक को सत्र के मध्य में कार्यमुक्त नहीं किया जाएगा।

5) प्रवेश प्रक्रिया–

(i) कार्मिकों के नामांकन निर्धारित प्रपत्र में भरकर निकटतम प्रशिक्षण केंद्र से संपर्क करें।

(ii) प्रवेश **"पहले आओ, पहले पाओ"** आधार पर होता है तथापि अनिवार्य प्रशिक्षण श्रेणी के कार्मिकों को प्राथमिकता दी जाती है तथा इनमें से भी पहली प्राथमिकता अधिक आयु के कार्मिकों को दी जाती है।

(iii) नामित कार्मिकों को नियत तिथि पर व्यक्तिगत रूप से प्रशिक्षण केंद्र पर उपस्थित होना होगा। उपर्युक्त शर्त प्रवेश के लिए कार्मिकों की व्यक्तिगत रूप से उपस्थिति तथा सीटों के उपलब्ध रहने तक ही लागू होगी।

(iv) यह आवश्यक है कि कार्मिकों को प्रशिक्षण केंद्र के लिए कार्यालय से तभी कार्यमुक्त किया जाए, जब

प्रशिक्षण केंद्र द्वारा कार्यक्रम में उनके प्रवेश की पुष्टि कर दी जाए।

(ग) अल्प अवधि प्रशिक्षण (वैलिडेशन पाठ्यक्रम)– यह एक आउटरीच प्रशिक्षण कार्यक्रम है जिसका प्रारंभ जुलाई 2015 से किया गया है। यह कार्यक्रम उपयोगकर्ता कार्यालयों की मांग पर केंद्रीय हिन्दी प्रशिक्षण संस्थान/हिन्दी शिक्षण योजना के अधिकारियों द्वारा मांगकर्ता कार्यालय के परिसर में ही पांच पूर्ण कार्यदिवसों में नियमित कक्षाओं में पूर्ण किया जाता है। केवल पाँच दिन की अल्प अवधि में ही टंकण प्रशिक्षण पूर्ण होने के कारण ही इसे अल्प अवधि (अल्पावधि) प्रशिक्षण नाम दिया गया है।

आउटरीच माध्यम का यह अल्प अवधि प्रशिक्षण कार्यक्रम उन कार्यालयों के लिए अति उपयोगी है–

- जिन कार्यालयों के कर्मचारियों के लिए केंद्रीय हिन्दी प्रशिक्षण संस्थान/हिन्दी शिक्षण योजना के प्रशिक्षण केंद्र सुलभ/निकट नहीं हैं अथवा
- वे किसी कारणवश अपने कार्मिकों को उपर्युक्त दीर्घकालिक/अल्पकालिक नियमित टंकण प्रशिक्षण कार्यक्रमों के लिए नहीं भेज सकते,

परंतु

- कार्यालय में प्रशिक्षण के लिए अपेक्षित उपयुक्त संसाधन जैसे प्रशिक्षण कक्ष, कंप्यूटर, प्रिंटर, इंटरनेट आदि उपलब्ध हैं तथा
- वे अपेक्षित कार्मिकों को कार्यालय में ही पांच पूर्ण दिवसीय प्रशिक्षण के लिए दैनिक कार्यालयी कार्यों से मुक्त रख सकते हैं।

1) **प्रशिक्षण अवधि**– पाँच पूर्ण कार्यदिवसीय नियमित कक्षाएँ (कार्यालय समय में), उपयोगकर्ता कार्यालय में ही।

2) **सत्र** –

क्रमांक	सत्र	नामांकन	परीक्षा
1	उपयोगकर्ता कार्यालयों की मांग पर वर्षभर में किसी भी समय	कार्यालय द्वारा निकटतम प्रशिक्षण केंद्र से संपर्क करके वर्षभर में किसी भी समय	प्रशिक्षण के पश्चात आगामी जनवरी अथवा जुलाई में, जो भी पहले हो

3) चूंकि यह कार्यक्रम अपने कार्यालय में ही संचालित किया जाना है, अतः अधिकतम कार्मिकों को नामित करके इसका पूर्ण लाभ लिया जाना चाहिए।

4) **प्रवेश प्रक्रिया**–

(i) कार्मिकों की संख्या एवं विवरण सहित इच्छुक कार्यालय उप निदेशक (टंकण/आशुलिपि), हिन्दी शिक्षण योजना (मध्योत्तर), राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, लेवल–6, ईस्ट ब्लॉक–7, सैक्टर–1, आर. के. पुरम, नई दिल्ली, जो इस कार्यक्रम के नोडल अधिकारी हैं, से संपर्क करें।

(ii) प्रशिक्षण संबंधी उपयुक्त संसाधन जैसे प्रशिक्षण कक्ष, कंप्यूटर, प्रिंटर, इंटरनेट आदि की व्यवस्था मांगकर्ता कार्यालय द्वारा की जाएगी।

(iii) प्रशिक्षार्थियों को "हिन्दी शब्द संसाधन" पाठ्य पुस्तक निःशुल्क दी जाएगी।

(iv) पांच दिवसीय प्रशिक्षण के पश्चात् शेष अभ्यास कार्मिकों को स्वयं ही करना होगा तथा हिन्दी शिक्षण योजना की आगामी टंकण परीक्षा, जनवरी अथवा जुलाई (जो भी पहले हो), के लिए अपना परीक्षा फॉर्म भरकर परीक्षा देनी होगी।

(v) इस कार्यक्रम का प्रशिक्षण पाठ्यक्रम एवं प्रश्न पत्र वही रहेगा, जो उपर्युक्त दीर्घकालिक/अल्पकालिक प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों के लिए निर्धारित है।

(vi) इस टंकण परीक्षा को उत्तीर्ण करने पर ही इन कार्मिकों को प्रशिक्षित माना जाएगा।

घ) पत्राचार प्रशिक्षण– यह एक पत्राचार प्रशिक्षण कार्यक्रम है। नामित कर्मचारी अपने ही कार्यालय में छह माह की अवधि में प्रतिदिन एक घंटा अभ्यास करता है तथा उसे केवल हिन्दी शिक्षण योजना के व्यक्तिगत संपर्क कार्यक्रम में अनिवार्यतः भाग लेना होता है।

पत्राचार माध्यम का यह प्रशिक्षण कार्यक्रम उन कार्यालयों के लिए बेहद उपयोगी है –

- जिन कार्यालयों के कर्मचारियों के लिए केंद्रीय हिन्दी प्रशिक्षण संस्थान/हिन्दी शिक्षण योजना के प्रशिक्षण केंद्र सुलभ/निकट नहीं हैं, आठ किमी या इससे अधिक दूरी पर हैं अथवा
- जिन कार्मिकों को प्रशिक्षण केंद्रों पर सीमित सीटें होने के कारण या अन्य कारणों से प्रवेश नहीं मिल पाता अथवा
- वे किसी कारणवश अपने कार्मिकों को उपर्युक्त दीर्घकालिक/अल्पकालिक नियमित टंकण प्रशिक्षण कार्यक्रमों के लिए नहीं भेज सकते,

तथा

- कार्यालय में प्रशिक्षण के लिए अपेक्षित उपयुक्त संसाधन जैसे प्रशिक्षण कक्ष, कंप्यूटर, प्रिंटर, इंटरनेट आदि पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध न हों अथवा
- वे कम कार्मिक संख्या या अन्य किसी कारण से अपेक्षित कार्मिकों को कार्यालय समय में अल्प अवधि के पूर्ण दिवसीय प्रशिक्षण के लिए भी दैनिक कार्यों से मुक्त रखने में असमर्थ हों।

1) **प्रशिक्षण अवधि–** छह माह, अपने ही कार्यालय में प्रतिदिन एक घंटा अभ्यास व तय कार्यक्रमानुसार व्यक्तिगत संपर्क कार्यक्रम में अनिवार्य प्रतिभागिता।

2) **सत्र–** वर्ष में दो सत्र

क्रमांक	सत्र	नामांकन	परीक्षा
1	फरवरी से जुलाई	दिसम्बर–जनवरी	जुलाई
2	अगस्त से जनवरी	जून–जुलाई	जनवरी

3) चूंकि इस कार्यक्रम के अंतर्गत नामित कार्मिकों की प्रशिक्षण प्रक्रिया से कार्यालय के दैनिक कार्य प्रायः निर्विघ्न रहते हैं, अतः अधिकतम कार्मिकों को नामित करके इसका पूर्ण लाभ लिया जाना चाहिए।

4) **प्रवेश प्रक्रिया–**

(i) कार्मिकों के नामांकन निर्धारित प्रपत्र में भरकर उप निदेशक, हिन्दी शब्द संसाधन (हिन्दी टाइपिंग), पत्राचार पाठ्यक्रम स्कन्ध, केंद्रीय हिन्दी प्रशिक्षण संस्थान, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, 2–ए, पृथ्वीराज रोड़, नई दिल्ली–110011 को यथासमय भेजे जाएं।

(ii) नामांकन स्वीकार होने पर कार्मिकों को तय मानदंड अनुसार अपने कार्यालय में ही प्रतिदिन एक घंटा अभ्यास करना होगा।

(iii) व्यक्तिगत संपर्क कार्यक्रम में भाग लेना अनिवार्य है तथा इसमें अनुपस्थित होने वाले कार्मिकों को परीक्षा में बैठने से रोका जा सकता है।

(iv) व्यक्तिगत संपर्क कार्यक्रम में भाग लेने वाले कार्मिक ड्यूटी पर माने जाते हैं।

(ङ) प्राइवेट परीक्षा – (केवल परीक्षा के लिए नामित) यदि उपर्युक्त चारों टंकण प्रशिक्षण कार्यक्रमों के

माध्यम से भी अपेक्षित कार्मिकों को टंकण प्रशिक्षण दिलवाया जाना संभव न हो, तो प्राइवेट परीक्षा सर्वोत्तम साधन है। इस कार्यक्रम के अंतर्गत कार्मिक को केवल परीक्षा के लिए ही नामित किया जाता है। कार्मिक के अभ्यास का कोई निश्चित कार्यक्रम नहीं होता अपितु वह अपनी व कार्यालय की सुविधानुसार टंकण अभ्यास करता है तथा उसे केवल परीक्षा के लिए ही प्रशिक्षण केंद्र/परीक्षा केंद्र जाना होता है। इस विधि में कार्मिक को न तो किसी व्यक्तिगत संपर्क कार्यक्रम में भाग लेना होता है तथा न ही प्रशिक्षण केंद्र से कोई अन्य संपर्क रहता है।

1) परीक्षा– वर्ष में दो बार : (i) जुलाई (ii) जनवरी

2) चूंकि इस कार्यक्रम के अंतर्गत नामित कार्मिकों की प्रशिक्षण प्रक्रिया से कार्यालय के दैनिक कार्य प्रायः निर्विघ्न रहते हैं, अतः अधिकतम कार्मिकों को नामित करके इसका पूर्ण लाभ लिया जाना चाहिए।

3) प्रवेश प्रक्रिया

(i) कार्मिकों के नामांकन निर्धारित प्रपत्र में भरकर निकटतम प्रशिक्षण केंद्र या उप निदेशक (टंकण/आशुलिपि), हिन्दी शिक्षण योजना (मध्योत्तर), राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, लेवेल–6, ईस्ट ब्लॉक–7, सैक्टर–1, आर. के. पुरम, नई दिल्ली से संपर्क करें।

(ii) कार्मिक अपनी व कार्यालय की सुविधानुसार टंकण अभ्यास करता है तथा उसे केवल परीक्षा के लिए ही प्रशिक्षण केंद्र/परीक्षा केंद्र जाना होता है।

(iii) प्राइवेट परीक्षा के लिए नामित कार्मिकों के प्रशिक्षण के लिए कार्यालय में हिन्दी टंकण जानने वाले किसी/किन्हीं कार्मिकों को दायित्व सौंपते हुए प्रशिक्षक नियुक्त किया जा सकता है जो कार्मिकों के साथ समन्वय करके उन्हें टंकण का अभ्यास करवाएंगे।

(iv) उक्त प्रशिक्षकों को राजभाषा विभाग द्वारा अंशकालिक हिन्दी प्राध्यापकों के लिए निर्धारित मानदेय का भुगतान किया जा सकता है।

4) हिन्दी प्राध्यापकों/प्रशिक्षकों को देय मानदेय –

क्रमांक	मद	प्रशिक्षार्थियों की संख्या	मानदेय की दर (₹)
1	एकांतर दिवस कक्षाओं के लिए	1 से 10 तक	1080/– प्रतिमाह
		10 से अधिक	1080/– + 70/– प्रति अतिरिक्त प्रशिक्षार्थी प्रतिमाह
2	दैनिक कक्षाओं के लिए	1 से 10 तक	1400/– प्रतिमाह
		10 से अधिक	1400/– + 90/– प्रति अतिरिक्त प्रशिक्षार्थी प्रतिमाह

च) निजी प्रयासों से टंकण प्रशिक्षण– इस व्यवस्था के अंतर्गत कार्मिक कार्यालय से पूर्णतः आत्मनिर्भर होकर प्रशिक्षण प्राप्त करता है। कार्यालय कार्मिक के अनुरोध पर उसे प्राइवेट प्रशिक्षार्थी के तौर पर परीक्षा के लिए नामित करता है। कार्यालय की ओर से किसी प्रशिक्षक की नियुक्ति नहीं की जाती। इसके अतिरिक्त प्रशिक्षण की यह व्यवस्था सर्वथा प्राइवेट परीक्षा के माध्यम से प्रशिक्षण के समान ही है।

7. परीक्षा शुल्क– उपर्युक्त सभी पाठ्यक्रमों के लिए परीक्षा शुल्क के नियम पूर्णतः समान हैं।

(i) केंद्रीय उपक्रमों, निगमों, निकायों तथा बैंकों आदि के कर्मचारियों के लिए 100/– रुपए प्रति प्रशिक्षार्थी परीक्षा शुल्क देय है।

(ii) परीक्षा शुल्क का भुगतान उप निदेशक (परीक्षा), हिन्दी शिक्षण योजना, नई दिल्ली के नाम बैंक ड्राफ्ट/ऑनलाइन माध्यम से किया जाए।

(iii) केंद्र सरकार के मंत्रालयों/विभागों तथा उनके संबद्ध तथा अधीनस्थ कार्यालयों के कर्मचारियों को परीक्षा शुल्क से छूट प्राप्त है।

सांविधिक निकाय होने के कारण क.रा.बी. निगम द्वारा ₹100/– प्रति प्रशिक्षार्थी परीक्षा शुल्क का भुगतान किया जाना अपेक्षित है।

8. वित्तीय प्रोत्साहन– उपर्युक्त किसी भी कार्यक्रम/पाठ्यक्रम के माध्यम से हिन्दी टंकण प्रशिक्षण पूर्ण करने पर कार्मिकों को अनेक प्रकार के वित्तीय लाभ प्रदान किए जाते हैं–

(क) **वैयक्तिक वेतन–** हिंदी शब्द संसाधन/हिंदी टंकण परीक्षा 30 शब्द प्रति मिनट की गति से पास करने पर पात्र कार्मिकों को बारह महीने की अवधि के लिए एक वेतनवृद्धि के बराबर राशि का वैयक्तिक वेतन प्रदान किया जाता है।

(ख) **नकद पुरस्कार –** हिंदी शब्द संसाधन/हिंदी टंकण परीक्षा पास करने पर और निर्धारित शर्तें पूरी करने पर पात्र कार्मिकों को निम्नलिखित अनुसार नकद पुरस्कार प्रदान किए जाते हैं :

क्रमांक	प्राप्त अंक	नकद पुरस्कार राशि (₹)
1	90 प्रतिशत या इससे अधिक परंतु 95 प्रतिशत से कम	800/–
2	95 प्रतिशत या इससे अधिक परंतु 97 प्रतिशत से कम	1600/–
3	97 प्रतिशत या इससे अधिक	2400/–

(ग) **एकमुश्त पुरस्कार–** पत्राचार/प्राइवेट परीक्षा/निजी प्रयत्नों से हिन्दी शब्द संसाधन/हन्दी टंकण की परीक्षा उत्तीर्ण करने पर पात्र कार्मिकों को अन्य प्रोत्साहन लाभों/राशि के साथ–साथ ₹1600/– का एकमुश्त पुरस्कार भी देय होगा।

(राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय का.ज्ञा. सं. 12011/4/89–रा.भा. (घ) दिनांक 31.03.1967 तथा का. ज्ञा. सं. 21034/66/2010–रा.भा.(प्रशि.) दिनांक 29.07.2011)

(घ) जो प्रशिक्षार्थी पत्राचार/प्राइवेट परीक्षा/निजी प्रयत्नों से हिन्दी शब्द संसाधन/हिन्दी टंकण की परीक्षा उत्तीर्ण करते हैं, उन्हें निर्धारित प्रतिशत से 5 प्रतिशत अंक कम प्राप्त करने पर भी एकमुश्त पुरस्कार/नकद पुरस्कार राशि प्रदान की जाएगी।

(ङ) **अंग्रेजी टंककों/अवर/प्रवर श्रेणी लिपिकों द्वारा हिन्दी में टंकण करने के लिए प्रोत्साहन योजना:** योजना के अंतर्गत प्रत्येक कैलेंडर माह के दौरान प्रतिदिन औसतन पाँच टिप्पणी/पत्र हिन्दी में टंकित करने वाले पात्र अंग्रेजी टंककों, अवर/प्रवर श्रेणी लिपिकों को ₹160/– प्रति माह प्रोत्साहन राशि दी जाती है। इसके लिए प्रत्येक आवेदक को मुख्यालय द्वारा नियत एवं राजभाषा शाखा द्वारा परिचालित प्रपत्र में आवेदन करना होता है जो अनिवार्यतः आवेदक के नियंत्रण अधिकारी से प्रतिहस्ताक्षरित हो। प्रत्येक अंग्रेजी टंकक/अवर/प्रवर श्रेणी लिपिक को यह प्रोत्साहन राशि नियत शर्तों के अंतर्गत उनके पूरे सेवाकाल के दौरान उक्त पद पर बने रहने तक दी जा सकती है।

(च) प्रशिक्षण केंद्र/कक्षा कार्यालय से 1.6 किमी से अधिक दूर होने पर प्रशिक्षु को आने–जाने का वास्तविक मार्ग व्यय नियमानुसार देय होगा।

(छ) टंकण परीक्षा उत्तीर्ण करने पर ही कार्मिकों को प्रशिक्षित माना जाएगा।

(ज) उपर्युक्त सभी वित्तीय लाभ कार्मिक के संबंधित कार्यालय द्वारा ही दिए जाते हैं।

(झ) गृह मंत्रालय के का.ज्ञा. सं. 24/16/67–आई.टी.ए.आई दिनांक 31.03.1967 के द्वारा इन नकद पुरस्कारों पर आयकर से छूट प्राप्त है।

बीमाकृत व्यक्तियों को देय चिकित्सा हितलाभ सुविधाएँ एवं तत्संबंधी प्रक्रिया

चन्द्र भूषण
सामाजिक सुरक्षा अधिकारी

ब्रिटेन सरकार में लेबर पार्टी बनने के पश्चात् इस बात के प्रयास पर जोर दिया गया कि श्रमिकों के उत्थान के लिए बीमा और चिकित्सा सुविधाओं को सरकारी स्तर पर लागू किया जाए। उसी आशय से रॉयल कमीशन बनाया गया जिसने अपनी रिपोर्ट सन् 1929 में सरकार को सौंपी। परन्तु तत्कालीन भारत की ब्रिटिश सरकार उसे लागू करने के लिए अपने स्तर पर जिम्मेदारी नहीं लेना चाहती थी और इस प्रकार मामला टलता रहा। दूसरे विश्व युद्ध के परिणाम स्वरूप ब्रिटेन ने भारत को एक स्वतन्त्र राज्य का दर्जा देने का फैसला कर लिया था और तत्पश्चात् सरकार ने सन् 1946 में एक बिल प्रस्तुत किया जिस पर भारत की ब्रिटिश सरकार ने अपने स्तर पर कोई कार्रवाई तत्काल रूप से नहीं की और इस बिल को तत्कालीन विधान मण्डल की चयन समिति के समक्ष रख दिया। इस चयन समिति ने सन् 1948 में कुछ संशोधनों के साथ तत्कालीन गवर्नर जनरल की सहमति से इसे 19.4.1948 को लागू कर दिया जो कि बाद में कर्मचारी राज्य बीमा अधिनियम 1948 बन गया।

चिकित्सा हितलाभ बीमाकृत व्यक्तियों व उनके पारिवारिक सदस्यों के लिए सर्वप्रथम एवं प्रमुख परिलाभ है और उनके जीवन में एक रीढ़ की हड्डी के समान है जिसके बिना जीवन की कल्पना अधूरी दिखाई देती है। बीमाकृत व्यक्तियों के लिए चिकित्सा हितलाभ की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि केवल चिकित्सा हितलाभ ही एक ऐसा परिलाभ है जो बिना किसी अंशदान के वेतन का ध्यान न रखते हुए सभी को एकरूपता में मिलता है जबकि नकद हितलाभ इस विशेषता से पूर्णतः वंचित है।

बीमाकृत व्यक्तियों एवं उनके आश्रित पारिवारिक सदस्यों को दिए जाने वाला चिकित्सा हितलाभ मुख्य रूप से राज्य सरकारों द्वारा संचालित किया जाता है। केवल राजधानी दिल्ली में इसका संचालन निगम द्वारा किया जाता है। चूंकि ''स्वास्थ्य'' राज्य सूची के अन्तर्गत आता है इसलिए चिकित्सा हितलाभ प्रदान करने के लिए संवैधानिक रूप से भी राज्यों की हिस्सेदारी तर्कसंगत है। हमारे संविधान में ''स्वास्थ्य'' का विषय राज्य सूची में भी अंकित है, हालांकि केन्द्र सरकार राज्य से सलाह मशवरा करके इसमें संशोधन भी कर सकती है।

काबिले–जिक्र है कि चिकित्सा हितलाभ को कामयाब बनाने में चिकित्सा व्यय का 7/8 भाग निगम द्वारा वहन किया जाता है और 1/8 भाग राज्य सरकारो द्वारा वहन किया जाता है। साथ ही साथ औषधालयों के रखरखाव में भी राज्य सरकार की जिम्मेदारी होती है। इसके अलावा चिकित्सा के संबंध में निगम प्रशासनिक व्यय भी करता है। परन्तु कोई भी फेरबदल अथवा संशोधन राज्य सरकार के साथ सलाह करके ही किया जाता है क्योंकि संविधान में स्वास्थ्य का विषय राज्य की सूची में आता है।

बीमाकृत व्यक्तियों को चिकित्सा सुविधाओं के अन्तर्गत दी जाने वाली सुविधाओं के लिए मुख्यतः तीन महत्वपूर्ण इकाइयां सदैव कार्यशील रहती हैं जिनका वर्णन इस प्रकार से है:

1) प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र 2) माध्यमिक स्वास्थ्य देखरेख

3) तृतीयक सुविधाएँ अथवा देखरेख

1) प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र –

बीमाकृत व्यक्तियों एवं उनके परिवारजनों के स्वास्थ्य परिलाभ के लिए प्राथमिक स्वास्थ्य सेवा केन्द्र प्रथम सीढ़ी का काम करते हैं। दरअसल बीमाकृत व्यक्ति और चिकित्सक के सीधे सम्पर्क अथवा सम्बन्ध का यह पहला कदम है। प्राथमिक स्वास्थ्य सेवा औषधालय के माध्यम से प्रदान की जाती है जिसमें निम्नलिखित स्टाफ मुख्य हैं–

1. चिकित्सक एवं बीमा चिकित्सा प्रभारी
2. स्टाफ नर्स
3. भेषज
4. चपरासी

उपर्युक्त स्वास्थ्य सेवाकर्ताओं में एक महिला कर्मचारी का होना आवश्यक है ताकि किसी महिला रोगी का निरीक्षण/जांच चिकित्सक द्वारा किसी महिला कर्मचारी की देखरेख में किया जा सके।

प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र मुख्यत: छोटे–मोटे चिकित्सा रोगों जैसे बुखार, दस्त लगना अथवा सामान्य दर्द के लिए कारगर साबित होते हैं। प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र द्वारा निम्नलिखित सुविधाएं भी दी जाती हैं–

1. मातृ एवं शिशु देखभाल।
2. टीकाकरण (प्रसवकाल के पूर्व व प्रसवकाल के बाद) जैसे कि बी.सी.जी., काली खांसी आदि के उपचार हेतु टीकाकरण व दर्दनिवारक गोलियां इत्यादि की आपूर्ति।
3. परिवार नियोजन के पारम्परिक एवं मौखिक गर्भ निरोधक प्रावधान
4. प्रसूति परिलाभ इत्यादि।

2) माध्यमिक स्वाथ्य केन्द्र

प्राथमिक स्वास्थ्य के बाद यह संदर्भ अस्पताल अथवा माध्यमिक परिलाभ लेने की पहली सीढ़ी है। इसके अन्तर्गत कुछ विशेष रोगों के लिए विशेष कार्यशैली के अन्तर्गत निम्नलिखित व्यक्तियों की सेवा अनिवार्य होती हैं–

1. विशेषज्ञ/चिकित्सक
2. शल्य चिकित्सक
3. शिशु विशेषज्ञ
4. औरतों के रोगों से संबंधित चिकित्सक

इस माध्यमिक स्वास्थ्य केन्द्र द्वारा निम्नलिखित सुविधाओं को प्रदान किया जाता है–

1. नैदानिक केन्द्र व सेवाएं
2. विकिरण चिकित्सा सेवाएं
3. प्रयोगशाला सेवाएं
4. रोग विज्ञान सेवाएं
5. कीटाणु विज्ञान सेवाएं।

उपर्युक्त के अलावा माध्यमिक स्वास्थ्य केन्द्र अथवा अस्पताल जहां औषधालय में चिकित्सकों द्वारा रेफर किया जाता है पूर्णत: संदर्भ अस्पताल का काम करता है जिसमें होम्योपैथी व आयुर्वेदिक चिकित्सा की सुविधा भी प्रदान की जाती है।

3) तृतीयक स्वास्थ्य सुविधाएं

बीमाकृत व्यक्ति व उसके परिवारजन माध्यमिक स्वास्थ्य सुविधाओं के अन्तर्गत लाभ नहीं ले पाते हैं, तो उन्हे गहन बीमारियों के लिए जैसे कि दिल के रोग, गुर्दे के रोग, फेफडों के रोग अथवा अति विशिष्ट रोगों की जांच के लिए निगम द्वारा अति विशिष्ट संस्थानों में इलाज के लिए भेजा जाता है। इसके अंतर्गत निम्नलिखित रोगी आते हैं:–

1. दिल के रोगी
2. गुर्दे के रोगी
3. फेफड़ों के रोगी
4. दमे इत्यादि के रोगी
5. कैंसर के रोगी आदि

राजभाषा विभाग को तिमाही आधार पर राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी रिपोर्ट ऑनलाइन भेजी जानी अनिवार्य है।

विचार अमृत

विचार परमात्मा द्वारा मानव मस्तिष्क को प्रदान किया गया वह अमृत है जो समस्त मानव निर्मित सभ्यताओं का आधार है। बुद्धिजीवी जब किसी सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आवश्यकता जनित परिस्थिति पर बैठकर मंथन करते हैं और किसी व्यवस्था अथवा निष्कर्ष पर गहन विचार-विमर्श के बाद पहुँचते हैं तो वही विचार अमृत हमारी समस्त मानव जाति के पथ प्रदर्शक साबित होते हैं। सच ही तो है विचारों के बिना यह जीवन और जीवन की कल्पना सब निराधार है। दूसरे शब्दों में विचार ही जीवन का आधार हैं।

क्षेत्रीय कार्यालय, चंडीगढ़ के कार्मिकों ने अपने विचारों को लेखनी द्वारा उकेर कर हमारे सम्मुख प्रस्तुत किया है। आइए जानें उनके मन के विचार और उनमें छुपे जीवन उपयोगी रहस्यों को। जाने कब कौन सा काम आ जाए......

'उपनयन' (जनेऊ) संस्कार
अपनी संस्कृति, अपनी पहचान

राजीव दीक्षित
अधिशाषी अभियंता

आज के इस दौर में हम अपनी संस्कृति और संस्कारों से दूर होते जा रहे हैं। यह एक विडम्बना ही है कि पश्चिमी सभ्यता को हम अपना रहे हैं और पश्चिम के लोग हमारी सभ्यता को अपनाने के लिए आतुर हैं। वृंदावन आदि धार्मिक स्थलों पर अगर हम देखें तो कितने ही विदेशी लोग आपको 'हरे राम, हरे कृष्ण' की धुन पर थिरकते मिल जाएंगे। मंत्रों का इतने अच्छे से उच्चारण करते हैं कि हम भारतीय शरमा जाएं। जनेऊ धारण कर मानो वे हमारी संस्कृति में रम गए हों। जबकि हमसे अगर पूछा जाए कि जनेऊ क्या है और इसे क्यों पहनते हैं तो शायद बहुत से लोग इसके बारे में अनभिज्ञ ही मिलेंगे। सच कहूँ तो मैं भी इसके बारे में अनभिज्ञ था। एक दिन मेरे मन में विचार आया कि इसके बारे में कुछ पढ़ा जाए। अपने स्वाध्याय के आधार पर अपनी संस्कृति की मुख्य पहचान जनेऊ के बारे में अर्जित ज्ञान को आपके साथ साझा करने का एक छोटा सा प्रयास कर रहा हूँ ताकि हम अपनी विस्मृत होती संस्कृति के बारे में कुछ जान सकें।

जनेऊ को उपवीत, यज्ञसूत्र, व्रतबन्ध, बलबन्ध, मोनीबन्ध और ब्रह्मसूत्र भी कहा जाता है। इसे उपनयन संस्कार भी कहते हैं। 'उपनयन' का अर्थ है, 'पास या सन्निकट ले जाना'। किसके पास? ब्रह्म (ईश्वर) और ज्ञान के पास ले जाना। यज्ञोपवीत को व्रतबन्ध भी कहते हैं। व्रतों से बंधे बिना मनुष्य का उत्थान सम्भव नहीं। यज्ञोवपीत को व्रतशीलता का प्रतीक मानते हैं। इसीलिए इसे सूत्र (फार्मूला, सहारा) भी कहते हैं। धर्म शास्त्रों में यम–नियम को व्रत माना गया है। बालक की आयुर्वृद्धि हेतु गायत्री तथा वेदपाठ का अधिकारी बनने के लिए उपनयन (जनेऊ) संस्कार अत्यन्त आवश्यक है। हिन्दू समाज का हर वर्ग जनेऊ धारण कर सकता है। जनेऊ तीन धागों वाला एक सूत्र होता है। यह सूत से बना पवित्र धागा होता है, जिसे व्यक्ति बाएं कंधे के ऊपर तथा दाईं भुजा के नीचे पहनता है, अर्थात् इसे गले में इस तरह डाला जाता है कि वह बाएं कंधे के ऊपर रहे।

जनेऊ में मुख्य रूप से तीन धागे होते हैं। प्रथम, यह तीन सूत्र त्रिमूर्ति ब्रह्मा, विष्णु और महेश के प्रतीक होते हैं। द्वितीय, यह तीन सूत्र देवऋण, पितृऋण और ऋषिऋण के प्रतीक होते हैं और तृतीय, यह सत्व, रज और तम का प्रतीक हैं। चौथा, यह तीन आश्रमों का प्रतीक हैं। सन्यास

हिन्दी कार्यशालाओं का आयोजन प्रत्येक तिमाही में यथासंभव नियमित अंतराल में किया जाए।

आश्रम में यज्ञोपवीत को उतार दिया जाता है। यज्ञोपवीत के एक–एक तार में तीन–तीन तार होते हैं। इस तरह कुल तारों की संख्या नौ होती है। एक मुख, दो नासिका, दो आँख, दो कान, मल और मूत्र के दो–कुल मिलाकर नौ द्वार होते हैं। यज्ञोपवीत में पाँच गांठ लगाई जाती हैं जो ब्रह्म, धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष का प्रतीक हैं। यह पाँच यज्ञों, पाँच ज्ञानेद्रियों और पंच कर्मों का प्रतीक भी हैं।

यज्ञोपवीत की लंबाई 96 अंगुल होती है। इसका अभिप्राय यह है कि जनेऊ धारण करने वाले को 64 कलाओं और 32 विद्याओं को सीखने का प्रयास करना चाहिए। चार वेद, चार उपवेद, छह अंग, छह दर्शन, तीन सूत्रग्रंथ, नौ अरण्यक– कुल मिलाकर 32 विद्याएं होती हैं। 64 कलाओं में जैसे– वास्तु निर्माण, व्यंजन कला, चित्रकारी, साहित्य कला, दस्तकारी, भाषा, यंत्र निर्माण, सिलाई, कढ़ाई, बुनाई, दस्तकारी, आभूषण निर्माण, कृषि ज्ञान आदि। यज्ञ द्वारा संस्कार किए गए विशिष्ट सूत्र को विशेष विधि से ग्रन्थित करके बनाया जाता है। तीन सूत्रों वाले इस यज्ञोपवीत को गुरू दीक्षा के बाद हमेशा धारण किया जाता है। अपवित्र होने पर यज्ञोपवीत बदल लिया जाता है। यज्ञोपवीत गायत्री मंत्र से शुरू होता है। गायत्री–उपवीत का सम्मिलन ही द्विजत्व है। यज्ञोपवीत में तीन तार हैं, गायत्री में तीन चरण हैं। 'तत्सवितुर्वरेण्यं'–प्रथम चरण, 'भर्गोदेवस्य धीमहि'–द्वितीय चरण, 'धियो यो नः प्रचोदयात्'–तृतीय चरण है। गायत्री महामंत्र की प्रतिमा–यज्ञोपवीत में नौ शब्द, तीन चरण, सहित तीन व्याहृतियाँ समाहित हैं। यज्ञोपवीत धारण करने का मन्त्र हैः–

यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात्।
आयुष्यमग्रं प्रतिमुञ्च शुभं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः।।

आदमी को दो जनेऊ धारण कराए जाते हैं। धारण करने के बाद उसे बताया जाता है कि उसे दो लोगों का भार या जिम्मेदारी वहन करनी है– एक पत्नी पक्ष की और दूसरी अपने पक्ष की अर्थात् पति पक्ष की। अब एक–एक जनेऊ में 9–9 धागे होते हैं जो हमें बताते हैं कि हम पर पत्नी और पति पक्ष के 9–9 ग्रहों का भार है जिसे वहन करना है। अब इन 9–9 धागों के अंदर से 1–1 धागे को निकाल कर देखें तो इसमें 27–27 धागे होते हैं। अर्थात् हमें पत्नी और पति पक्ष के 27–27 नक्षत्रों का भी भार या ऋण वहन करना है। अब अगर अंक विद्या के आधार पर देखें तो 27+9=36 होता है, जिसको एकल अंक बनाने पर 36=3+6=9 आता है, जो एक पूर्ण अंक है। अब अगर इस 9 में दो जनेऊ की संख्या अर्थात 2 और जोड़ दें तो 9+2=11 होगा जो हमें बताता है कि हमारा जीवन अकेले–अकेले दो लोगों अर्थात् पति और पत्नी (1 और 1) के मिलने से बना है। 1+1=2 होता है जो अंक विद्या के अनुसार चंद्रमा का अंक है। जब हम अपने दोनों पक्षों का ऋण वहन कर लेते हैं तो हमें असीम शांति की प्राप्ति हो जाती है।

धार्मिक दृष्टि से माना जाता है कि जनेऊ धारण करने से शरीर शुद्ध और पवित्र होता है। शास्त्रों के अनुसार आदित्य, वसु, रूद्र, वायु, अग्नि, धर्म, वेद, आप, सोम एवं सूर्य आदि देवताओं का निवास दाएं कान में माना गया है। अतः उसे दाएं हाथ से सिर्फ स्पर्श करने पर भी आचमन का फल प्राप्त होता है। आचमन अर्थात मंदिर आदि में जाने से पूर्व या पूजा करने के पूर्व जल से पवित्र होने की क्रिया को आचमन कहते हैं। पूर्वाषाढ़, अश्विनी, हस्त, चित्रा, स्वाति, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, ज्येष्ठा, पूर्वाफाल्गुनी, मृगशिरा, पुष्य, रेवती और तीनों उत्तरा नक्षत्र, द्वितीया, तृतीया, पंचमी, दशमी, एकादशी, तथा द्वादशी तिथियां, रवि, शुक्र, गुरू और सोमवार दिन, शुक्ल पक्ष, सिंह, धनु, वृष, कन्या और मिथुन राशियां, उत्तरायण सूर्य के समय में उपनयन यानी यज्ञोपवीत यानी जनेऊ संस्कार शुभ होता है।

मनोरमा सांगवान
धर्मपत्नी श्री संदीप सांगवान
सहायक

सुख और धन दौलत

अगर हमें सुख की सार्थक परिभाषा ढूंढनी है तो आवश्यक है कि हम सुख और धन–दौलत के आपसी संबंधों की पड़ताल करें। व्यक्तिगत संपन्नता और पूरे समाज की संपन्नता के लिए कोई भी तत्व इतना विघटनकारी और हानिकारक नहीं हो सकता जितना धन–दौलत और लोगों का उसके इस्तेमाल का तरीका। वास्तव में जीवन का कोई भी और ऐसा पहलू नहीं होगा, जिसमें सोच इतनी शांतिपूर्ण हो और उस सोच के परिणाम इतने अनर्थकारी हों। एलफ्रेड नोबेल ने कहा था कि जायदाद तो विरासत में मिल सकती है, मगर सुख को विरासत में पाना अंसभव है। इतनी बेरहम दौड़ और मोह–माया के दौर में हमें उम्मीद करनी चाहिए कि हम यह सबक सीखें कि अमीर और गरीब, प्रबंधकों और मजदूरों, सबके लिए शायद इससे आवश्यक सवाल कोई भी नहीं है कि वास्तव में हमारे लिए मूल्यवान है क्या? कुछ नहीं तो ऐसा सोचने से हमें घृणा और हिंसा की भावनाओं से पल दो पल में छुटकारा मिल जाएगा। अगर हम इन सच्चाइयों को इतनी सरल भाषा में कह पाएं कि संदेश हर किसी तक पहुँच जाए, तो मुझे विश्वास है कि लोग समाज के हालात सुधारने पर विचार शुरू कर देंगे, उसके लिए साधन जुटाएंगे और अंततः सबके लिए सुख ला पाएंगे।

मगर दुर्भाग्य यह है कि ज्यादातर लोग यह समझ कर चलते हैं कि अगर वे सब कुछ अपने संग न ले जा सके, तो कम से कम बच्चों के हाथ तो वह लग ही जाएगा। अमीर लोग धन–दौलत इस ढंग से जमा करते हैं जैसे नाम और जायदाद उन्हें सुख से भी संपन्न कर देंगे। मगर लोग जितना ज्यादा बटोरने लगते हैं, उतना ही यह उन्हें कम लगने लगता है और यह सब इसलिए क्योंकि उन्होंने अपने आप को इस बात का विश्वास दिला लिया है कि उनकी जायदाद किसी जादू से उनके बच्चों के लिए सुख में बदल जाएगी। बच्चों के लिए बहुत धन–दौलत छोड़ने का नतीजा अकसर यह होता है कि उन्हें विरासत में दुख मिलते हैं, न कि सुख।

कायदों के अंदर रहकर निजी संपत्ति को चलाने और असमान व्यवस्था से जीत पाने में उन्हें अपना पूरा जीवन लगाना पड़ेगा। जब निजी भौतिक तलाशों में हमें नितांत खोखलेपन का अहसास होने लगता है, तब यह अनुभूति भी जागती है कि दूसरों को कुछ दे सकने में ज्यादा आनंद है बजाय इस डर में रहने के कि दूसरे हमसे आगे निकल जाएंगे। भौतिक चीजें जमा करने की बेवकूफी में जीवन लुटा देने से अच्छा है स्वयं अपने आस्तित्व के स्रोत और मन की शांति की खोज। दृष्टिकोण में स्पष्टता आ जाए तो फिर ऐसे लोगों को उतरदायित्व का भी अनुभव होगा जो माया के जाल में फँसे हुए अपने भ्रम में जी रहे हैं। मगर इन सबकी शुरूआत तभी होगी जब हम धन–दौलत को लेकर खुद अपनी भ्रांतियों से छुटकारा पाएँ।

धन–दौलत और जायदाद के बारे में अगर इन सच्चाइयों को समझ लें तो लोग केवल रुपया पैसा बटोरने में अपना जीवन व्यर्थ नहीं लुटाएंगे। जिन्हें इन सच्चाइयों का अहसास हो गया है, वे कृतघ्न–चित्त होकर दूसरों की मदद करने में आनंद पाते हैं। वे दुनियावी तलाशों की बेवकूफी में समय व्यर्थ नहीं गँवाते। बल्कि ऐसे लोग जीवन के मुख्य और शाश्वत मूल्यों को गहराई से समझने के लिए संघर्षरत रहने में ही सुख और शांति का अनुभव करते हैं। मगर लोगों में इतनी साफ नजर पैदा करना मुश्किल होता है। एकचित्त होकर धन–दौलत के पीछे पड़ जाने की बेवकूफी के उदाहरणों से इतिहास भरा पड़ा है।

स्पष्ट दृष्टिकोण और भौतिक चीजों को जीवन में पाने की दृष्टि–इन दोनों को उभारने के लिए समय और आध्यात्मिक मनन की जरूरत होती है और ये चीजें उसी धन–दौलत और सामाजिक प्रतिष्ठा से जुट पाती हैं, जिन्हें पाने में हर व्यक्ति जुटा है। ठीक इसलिए यह जरूरी हो जाता है कि हम इस पर ध्यान से विचार करें। भौतिक चीजों की वास्तविकता के बारे में गहरी जानकारी और समझ जन–साधारण में जगा पाना मुश्किल लगता है। मगर मेरा विश्वास है कि अगर लोगों में सामाजिक चेतना जगाई जा सके तो भौतिक चीजों के प्रति जो उनकी भ्रांतियाँ हैं, वे उजागर हो जाएंगी। खाली समय में मनन से गहराई तक पहुँच पाना तो बिरलों को ही नसीब होता है। इसलिए जागृत सामाजिक चेतना पर ही हमें अपना ध्यान केंद्रित करना चाहिए। जागृत सामाजिक चेतना का विकास करना सच्ची शिक्षा का प्राथमिक दायित्व है।

जलियांवाला बाग कांड – शहादत की एक सदी

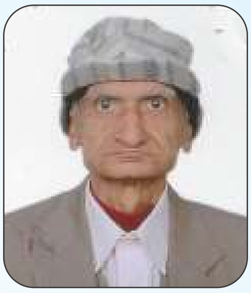

सुभाष चन्द्र गुप्ता
उप निदेशक (सेवानिवृत्त)

किसी देश की प्रगति उस देश की सभ्यता और संस्कृति के विकास से जानी जाती है। हमारे भौतिक विकास का नाम सभ्यता है और हमारे सांस्कृतिक विकास को संस्कृति कहते हैं। साहित्य, कला, दर्शन, संगीत, त्यौहार, उत्सव और पर्व हमारी संस्कृति के अंग हैं। दशहरा, दीपावली और होली हमारे धार्मिक त्यौहार और पर्व हैं। इन त्यौहारों को हमारा समाज बड़े हर्षोल्लास से मनाता है। इन त्यौहारों को मनाने से समाज की गति और गतिशीलता बनी रहती है। इसके अतिरिक्त 15 अगस्त और 26 जनवरी हमारे राष्ट्रीय त्यौहार या पर्व हैं। इन्हें पूरा राष्ट्र शिद्दत के साथ मनाता है। इन राष्ट्रीय पर्वों या त्यौहारों के अतिरिक्त अनेकों ऐसे राष्ट्रीय पर्व या उत्सव है जिन्हें पूरा राष्ट्र पूरी उमंग उत्साह के साथ मनाता है। जलियांवाला बाग कांड भी एक ऐसा ही पर्व है।

13 अप्रैल 1919 को वैसाखी के दिन नरसंहार की यह लोमहर्षक घटना हुई जिसे हम जलियांवाला बाग–कांड के नाम से जानते हैं।

हिन्दुस्तान अपनी आज़ादी के लिए संघर्ष कर रहा था। इस संघर्ष को दबाने के लिए सन् 1919 में बरतानिया सरकार रोलेट एक्ट नाम का एक बिल लाई। इस एक्ट का विरोध पूरे देश में हो रहा था। इस विरोध के जवाब में सरकार ने अमृतसर में कई स्वतंत्रता सेनानियों को गिरफ्तार कर लिया। इन क्रान्तिकारियों में सत्यपाल और सैफुद्दीन किचलू प्रमुख थे। इस एक्ट और अपने स्वतंत्रता सेनानियों की गिरफ्तारी के विरोध में 19 अप्रैल 1919 को वैसाखी के दिन बड़ी संख्या में लोग जलियांवाला बाग में इकट्ठे हुए। इसकी भनक जैसे ही जनरल डायर को लगी, वह 90 सैनिकों की टुकडी के साथ वहाँ पहुँच गया। जनरल डायर बाग के उत्तरी दरवाजे पर खड़ा था। बाग में अन्दर जाने का सबसे बड़ा रास्ता वही था। मगर इस रास्ते से भी दो लोग ही अन्दर आ सकते थे। डायर के साथ आई बख्तरबन्द गाड़ियों के साथ अन्दर जाना मुश्किल था। उसने चेस्टर्न को निर्देश दिया कि वह बख्तरबन्द गाड़ियों के साथ बाहर मोर्चा संभाल ले और जैसे ही कोई निकले उसे गोली मार दे।

इसके बाद वह बाग के संकरे रास्ते से बाग में घुसा। बाग में गोलियों की बौछार शुरू हुई, बाग के अन्दर मौत का तांडव नृत्य जारी था। राइफलों के नीचे जमीन पर गोलियों के ढेर बन चुके थे। लेकिन फौजियां की उंगलियाँ बोल्ट शिफ्ट कर–करके और निहत्थे लोगों का शिकार करके अभी थकी नहीं थी, न ही जनरल डायर के खून की प्यास बुझी थी। लगभग 5 बजकर 20 मिनट पर जनरल डायर ने मौत का तांडव बन्द किया। जब तक शहर के लोग हिम्मत करके अपने–अपने परिजनों को ढूंढने बाग में पहुँचे, तब तक कर्फ्यू का समय हो चुका था।

इतिहासकार और 'न्यू लाइट ऑन जलियांवाला बाग' के लेखक के. के. खुल्लर की बात को माना जाए तो असली दोषी डायर नहीं बल्कि ओ. ड्वायर था। पंजाब के तत्कालीन लेफ्टीनेंट गर्वनर माइकल ओ. ड्वायर

ने ही गोली चलाने के आदेश को मन्जूरी दी थी। पंजाब के महान शहीद उधम सिंह ने 13 मार्च 1940 को इस कांड का बदला लेते हुए कैक्सटन हॉल में ओ. ड्वायर को मार डाला था।

नरसंहार की रिपोर्ट इस प्रकार है। 20,000 से अधिक लोग वैसाखी का पर्व मनाने के लिए इक्ट्ठा हुए थे। निहत्थे लोगों पर 1650 से अधिक गोलियाँ चलाई गई। 120 शव कुएँ से बरामद हुए थे। 6 हफ्ते के मासूम बच्चे समेत सैंकडों महिलाओं और बच्चों की जान गई। ब्रिटिश आयोग द्वारा गठित हंटर आयोग ने आरम्भ में 200 लोगों के मारे जाने की बात मानी। पंडित मदनमोहन मालवीय की रिपोर्ट के अनुसार मारे जाने वाले लोगों की संख्या 1000 बताई गई। अमृतसर के खालसा कॉलेज के प्रिंसिपल गेराल्ड थे। उनकी रिपोर्ट में मारे जाने वाले लोगों की संख्या 1042 बताई गई। गांधी जी ने अपनी रिपोर्ट में मारे जाने वाले लोगों की संख्या 1500 बताई। सौ साल बीत जाने के बाद भी मारे जाने वाले लोगों की संख्या का ठीक से पता नहीं चला सका।

जलियांवाला कांड की प्रतिक्रिया स्वरूप आज़ादी के आंदोलन में एक क्रांतिकारी परिवर्तन आया। भारत के तीन मजहब हिन्दु, मुसलमान और सिक्ख एक हो गए। जलियांवाला बाग हत्याकांड ने अलग–अलग धर्मों की एकता की जो मिसाल दी, वह अंग्रेज हुकूमत को एक कड़े विरोध के साथ एक बड़ा संदेशा था।

स्वराज्य प्राप्ति का यह सफर लगातार आगे बढ़ता रहा। 13 अप्रैल सन् 1940 को अमृतसर में जलियांवाला बाग में प्रथम बार जलियांवाला बाग कांड के उपलक्ष्य में शहीदी दिवस मनाया गया। डॉ. सैफुद्दीन किचलू ने तिरंगा झंडा फहराया।

''जलियांवाला बाग हत्याकांड'' के 100 वर्ष पूरे होने पर पंजाब में जलियांवाला बाग में शहीदी दिवस मनाया गया। देश–विदेश से आने वाले पर्यटकों ने भी जलियांवाला बाग पहुँचकर मन्दिर की तरह शीश नवाया और श्रद्धांजलि अर्पित की तथा शहीदों की याद में दो मिनट का मौन रखा।

उपराष्ट्रपति श्री वेंकैया नायडू ने जलियाँवाला बाग का दौरा किया और शहीदों को श्रंद्धाजलि दी। श्री नायडू ने इस मौके पर एक सिक्का और एक डाक टिकट भी जारी किया। श्री नायडू ने आगंतुक पुस्तिका में लिखा, 'मैं बेहद कृतज्ञता महसूस करता हूँ क्योंकि मैं उन शहीदों को श्रद्धांजलि दे रहा हूँ जिन्होंने दमनकारी ब्रिटिश शासन की बुराई के खिलाफ लड़ाई लड़ते हुए अपने प्राण न्यौछावर कर दिए। मैं उन शहीदों को सलाम करता हूँ, जिन्होंने 100 साल पहले इसी स्थल पर जान गँवाई थी।''

राष्ट्रीय स्वाभिमान और हिन्दी

अजीत कुमार सिंह
अधीक्षक

राष्ट्रीय स्वाभिमान की अभिव्यक्ति करना अपने आप में एक गर्व की बात है और इस स्वाभिमान को अपनी राष्ट्रीय भाषा के साथ प्रदर्शित करना ''सोने पर सुहागा'' जैसा ही है। हमें भारतीय होने और हिन्दी को अपनी राष्ट्रभाषा के रूप में अपनाने में गर्व का आभास होना चाहिए।

जब हमारा देश गुलाम था तो अंग्रेजों द्वारा अपनी भाषा और संस्कृति का निरूपण किया जाता रहा और जब आज़ादी की लड़ाई शुरू हुई तो हमें एक ''राष्ट्रीय गौरव'' जैसे सम्बोधन की आवश्यकता थी जिससे आज़ादी की लड़ाई जीती जा सके। इस समय राष्ट्रभाषा के रूप में ''हिन्दी'' को मान्यता और तरजीह देने की परम्परा चल पड़ी थी और हिन्दी की सर्वव्यापकता और हिन्दी की समृद्धता को देखते हुए इसे राष्ट्रीय स्वाभिमान से जोड़ दिया गया। राष्ट्रीय स्वाभिमान के लिए एक ऐसी भाषा की जरूरत थी जिसकी प्रासंगिकता जन–जन तक हो और इस कसौटी पर ''हिन्दी'' बिल्कुल स्टीक थी। ''हिन्दी'' प्रायः सभी भाषाओं के साथ अपना संबंध स्थापित कर लेती है। ''हिन्दी'' में वह सब गुण मौजूद हैं जो जन–जन के लोकाचार में शामिल क्रिया–कलापों को वर्णित कर सकें और जब जन– प्रतिनिधित्व स्वाभिमान से जीने की इच्छा जाहिर करता है तो भाषा की आवश्यकता के रूप में हिन्दी मौजूद थी।

''हिन्दी'' के प्रयोग से हमें अपनी राष्ट्रीयता पर गौरव की अनुभूति होती है और ''हिन्दी'' के साथ अपने विचार की अभिव्यक्ति संपूर्णता के साथ हो जाती है।

''हिन्दी'' में काम करना और काम समझना दोनों ही आसान हैं। हिन्दी सर्वसमावेशी होने के कारण और समृद्ध होती गई और राष्ट्रीय स्वाभिमान का प्रतीक बन गई।

हमें श्री अटल बिहारी वाजपेयी का वह व्यक्तव्य याद करना चाहिए जब उन्होंने संयुक्त राष्ट्र संघ में भारत का प्रतिनिधत्व करते समय हिन्दी को आधार बनाकर राष्ट्रीय स्वाभिमान को जागृत किया था। हमें राष्ट्रीय स्वाभिमान का ऐसा उदाहरण हमेशा याद रखना चाहिए।

राष्ट्रीय स्वाभिमान में हिन्दी का योगदान अप्रतिम था और अप्रतिम रहेगा। हिन्दी को भारतीय जनमानस ने अपने दिल में जगह दी और राष्ट्रीय गौरव में हिन्दी की सार्थकता सिद्ध की। राष्ट्रीय स्वाभिमान में राष्ट्रभाषा का होना अति आवश्यक है और हिन्दी ने इस कमी को पूरा किया। आज भी जब भी देश के स्वाभिमान का वर्णन किया जाता है तो वहाँ हिन्दी को सर्वप्रथम भाषा का आधार बनाया जाता है।

सराहनीय तथ्य यह भी है कि हमारे माननीय प्रधानमंत्री और अन्य गणमान्य व्यक्तियों द्वारा भी राष्ट्रीय स्वाभिमान के रूप में हिन्दी का प्रयोग और प्रसार किया जाता है।

आज हिन्दी को कई राज्यों में अनिवार्य शिक्षा का माध्यम माना गया है और वे राज्य भी इस भाषा के साथ तरक्की कर रहे हैं।

भाषा के रूप में हिन्दी ने राष्ट्रीयता को एक नया आयाम दिया और आज जब हम एक स्वतन्त्र देश में जी रहे हैं और हिंदी देश की एक पहचान हो चुकी है तो हिन्दी भी भाषा के रूप में हमें स्वाभिमान के साथ काम करने की प्रेरणा देती है। राष्ट्रीय स्वाभिमान के रूप में हिन्दी ने अमूल्य योगदान दिया है।

हिन्दी एक ऐसी भाषा है जो कई भाषाओं को बढ़ावा देती है और अपनी सार्थकता सिद्ध करती है। अतः हमें इसको देश की भाषा के रूप में स्वीकार करना भी चाहिए।

आत्म विश्वास

गौरव नन्दा
प्रवर श्रेणी लिपिक

आत्म–विश्वास क्या है?

स्वयं पर यकीन, स्वयं पर विश्वास होना। जिसको स्वयं पर यकीन न हो तो वह व्यक्ति कभी भी कामयाब नहीं हो सकता। सफल होने के लिए स्वयं पर विश्वास होना बहुत जरूरी है। यदि हमें स्वयं पर विश्वास हो कि मैं यह काम कर सकता हूँ तो हम उसे अवश्य ही पूरा कर लेंगे। परन्तु यदि पहले ही मन में यह बात आ जाए कि पता नहीं मुझसे यह कार्य हो भी पाएगा कि नहीं, तो चाहे कितनी भी कोशिश कर लें, कार्य आरम्भ ही नहीं कर पाएंगे। यदि मजबूरी में आरम्भ कर भी लें तो कभी सफलता प्राप्त नहीं कर पाएंगे।

यह आत्मविश्वास और हिम्मत ही तो है जो हमें इस समाज में और इस संसार में योग्य बनाती है। यह हमारा फैसला और आत्म परिस्थितियाँ ही जीने की प्रेरणा देती हैं। कई बार हमारे जीवन में बहुत बड़े कष्ट आ जाते हैं परन्तु हम उस असहय अवस्था को भी सहन करके अपनी हिम्मत नहीं हारते क्योंकि कोई न कोई आशा होती है जिस के सहारे हम अपने जीवन को जीए चले जाते हैं। हमारा आत्मविश्वास हमें कहता है–

रात भर का मेहमां अन्धेरा, किसके रोके रूका है सवेरा।

आत्म–विश्वास ही इन्सान को जिन्दगी के हर मोड़ पर जीने की एक नई राह दिखाता है। जीवन के हर क्षेत्र में हमें इसकी जरूरत होती है। कभी–कभी हम जो चाहते हैं, वह नहीं होता। हमने हजारों सपने संजोए होते हैं और कहीं न कहीं हमारे सपने अधूरे रह जाते हैं। सपनों का महल पलभर में चकनाचूर हो जाता है। बहुत दु:ख होता है तब, जब उनके साथ ही हमारी कुछ उम्मीदें जुड़ी होती है, उमंगें जुड़ी होती है, इच्छाएँ जुड़ी होती हैं और हम उन्हें अपना जीने का आधार मान लेते हैं। हम उनके टूटने पर स्वयं को टूटा हुआ अनुभव करने लगते हैं। हम निराश हो जाते हैं। कुछ भी अच्छा नहीं लगता परन्तु यदि हम उस पल में संभल जाएं तो परिणाम सुखद हो सकता है। माना कि ऐसा कर पाना बहुत कठिन है, परन्तु यदि संभल गए तो वास्तव में जीवन में कभी असफल नहीं होंगे। जिन्दगी में आगे बढ़ने के मौके और भी बहुत आएंगे। बस हम में हिम्मत होनी चाहिए हर मुश्किल से लड़ने की –

यह कह कर दिल ने मेरे, हौंसले बढ़ाए हैं, गमों की धूप के आगे, खुशी के साये हैं।

सिकन्दर का भी यही विचार था कि युद्ध हिम्मत से जीते जा सकते हैं, हथियारों से नहीं। उसकी छोटी सी सेना के पास केवल एक ही हथियार था, आत्मविश्वास। इतिहास साक्षी है कि अपनी छोटी सी सेना की बदौलत सिकन्दर ने आधी दुनिया जीत ली थी– सिकन्दर के विश्वास के बल पर। यदि वह यह मानकर चलता कि ऐसा तो कभी नहीं हुआ है? फिर मैं ऐसा कैसे कर सकता हूँ? दुनिया किसने जीती है? तो सिकन्दर भी कभी कामयाब न हो पाता, परन्तु उसने वह कर दिखाया जो पहले किसी ने नहीं किया था। यह हमारा आत्मविश्वास ही तो होता है जो हमें कुछ कर दिखाने की प्रेरणा देता है।

कुछ विशेष करने के लिए, भीड़ से अलग पहचान बनाने के लिए हमें परिश्रम तो करना ही पड़ेगा और परिश्रम सदा ही रंग लाता है। हो सकता है कि कुछ लोग आपको उत्साहित करें और ऐसा भी हो सकता है कि कुछ लोग आप पर हँसे, कुछ लोग आपको कहें कि 'अरे, यह क्या कर रहे हो?' ऐसे शब्दों से आपके आत्मविश्वास को ठेस

पहुँचेगी और हो सकता है कि आपके बढ़ते कदम यह सब सुनकर पीछे मुड़ना चाहें। यह कभी नहीं होने देना चाहिए। हमें सदा याद रखना चाहिए कि जीत उसी की होती है जिसकी अधिकांश लोगों ने कल्पना भी नहीं की होती। यह बात सदा याद रखें कि कुछ नया करने की धुन में रहने वाले, साधारण होते हुए भी अधिकतर लोगों से भिन्न होते हैं, विशेष होते हैं।

आत्म–विश्वास जगाने के लिए इन बातों का ध्यान रखना चाहिएः–

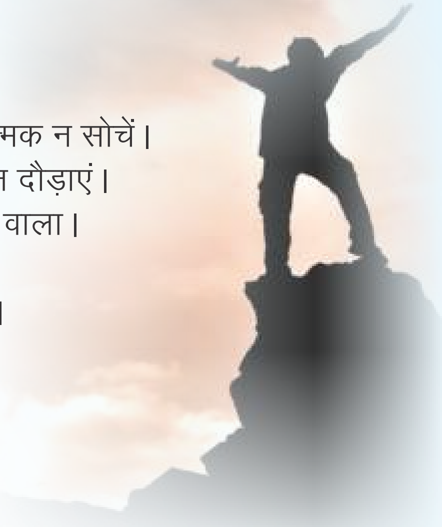

1. पहले स्वयं पर विश्वास करना सीखें और अपने दिमाग का इस्तेमाल करना सीखें।
2. अपनी सोच सकारात्मक रखें, सदैव सफलता के विषय में ही सोचें, कभी भी नकारात्मक न सोचें।
3. चाहे आप घर में हों या कार्यालय में, सोच के मैदान में कभी भी असफलता के घोड़े न दौड़ाएं।
4. किसी कठिन समय में घबराएं नहीं, अपितु यह सोचें कि ऐसा समय सदैव नहीं रहने वाला।
5. ऐसा कभी भी न सोचें कि आप सफल नहीं हो सकते।
6. जब कभी आप अपनी तुलना किसी और से करें तो स्वयं को किसी से कम न समझें।
9. जब भी बोलें स्पष्ट उच्चारण तथा साफ आवाज के साथ बोलें।
10. अपने निर्णय स्वयं लें, औरों पर निर्भर न रहें।
12. अपने हौंसले बुलन्द रखें क्योंकि बुलन्द हौंसले निर्णय की बुनियाद होते हैं।
13. अपने अनुभवों को धरती की तरह न बनाएं जिस पर हर कोई चल कर जाए। उन्हें आकाश की तरह बनाएं जिन्हें हर कोई छूना चाहे।

मानव की सेवा

निपेन्द्र सिंह कटकवाल
प्रवर श्रेणी लिपिक

मानव का जन्म जीव–जन्तुओं व पशु–पक्षियों से उत्तम है। मनुष्य के पास अच्छा बुरा सोचने की शक्ति होती है लेकिन वह अपने जीवन में कर्म अच्छा नहीं करता है। मनुष्य, जीव–जन्तुओं और पशु–पक्षियों को अपना भोजन बनाता है। परमात्मा ने मनुष्य को खाने–पीने के लिए बहुत कुछ दिया है लेकिन मनुष्य मांस खाते हैं। मनुष्य पैदा होने के बाद घमण्ड के साये में जीवन जीता है। जमीन–जायदाद, धन–दौलत–ये सब भगवान के हैं। इस मिट्टी पर घमण्ड कैसा? इंसान जैसा काम करता है भगवान से उसका वैसा ही फल पाता है। मनुष्य को हर समय अपनी मृत्यु तथा भगवान को याद रखना चाहिए। इस संसार में हमारा कुछ भी नहीं है। मनुष्य इस संसार में माया कमाने में लगा रहता है, पर अपने साथ एक भी पैसा नहीं ले जा सकता।

कबीर जी कहते हैं कि तन का, धन का तथा किसी प्रकार का अहंकार मत करो, काल ने तुम्हारी चोटी पकड़ रखी है। न जाने वह कहां कब मार डाले, उसके लिए किसी घर, देश या विदेश की कोई दूरी नहीं है।

कबीर जी ने आगे कहा है कि ऊँचे महल–मकान को देखकर मिथ्या गर्व न करो। कुछ समय में कल या परसों तक तुम्हारा काल आ जाएगा। फिर तुम्हें भूमि पर लेटना पड़ेगा और तुम्हारे ऊपर घास जमेगी। अतः इस दुर्दशा का विचार कर, गर्व मत करो।

जब अंग्रेजी समाचार पत्रों में विज्ञापन दिए जाते हैं तो विज्ञापनों के अंत में यह उल्लेख किया जाना अनिवार्य है कि ''अधिसूचना/विज्ञापन/रिक्ति संबंधी परिपत्र'' का हिन्दी रूपांतर वैबसाइट पर उपलब्ध है तथा इसके लिए पूर्ण लिंक भी दिया जाए।

कहानी

नानी नानी सुनाओ ना एक कहानी
जिसमें एक हो राजा और एक हो रानी
या जिसमें एक हो परियों की रानी
जिसकी जादुई छड़ी की दुनिया दीवानी

कहानियां कभी जीवन की यथार्थ परिस्थितियों का बोध कराकर मन को द्रवित कर देती हैं तो कभी कल्पना के एक ऐसे संसार में हमें ले जाती हैं जहाँ जिज्ञासा और कोतुहल तो कहानी के साथ–साथ चरम सीमा पर होता है परंतु यह यथार्थ से कोसों दूर होता है। कभी–कभार आप–बीती व जग–बीती भी सुंदर कहानी बन जाती हैं जो पथ प्रदर्शक का काम भी करती हैं।

ऐसी ही कुछ घटनाओं पर आधारित कहानियों को कार्यालय के कार्मिकों द्वारा लिखा गया है। आइए जरा देखें इनमें क्या लिखा है....

दस दिन का मेहमान

अश्वनी कुमार
वरिष्ठ अनुवादक

एक बार की बात है कि एक दिन मैं प्रातः जब पार्क में सैर करके घर की तरफ आ रहा था तो मुझे अचानक घर के पास ही गली में एक अजीब–सी चीज़ दिखाई दी। उस पर कौवे मंडरा रहे थे तथा उसे अपनी चोंच से नोंच रहे थे। मुझे लगा कि कुछ गड़बड़ है। मैं जब समीप पहुँचा तो देखा कि किसी पक्षी का नन्हा सा बच्चा जो उड़ना सीख रहा था, शायद अपनी पहली उड़ान में ही नीचे गिर गया और कौवों ने उसे अपना शिकार बना लिया। कौवों ने उसके पीछे के पंखों को नोच डाला और वह बेसुध हो गया था। उसके पिछले हिस्से से खून टपक रहा था। बच्चा इतना छोटा था कि यह पता नहीं चल पा रहा था कि बच्चा किस पक्षी का है। मैंने उसे उठाया और घर ले आया।

घर आने पर परिवार के सभी सदस्य उसे देखकर सहानुभूति जताने लगे। मेरा ग्यारह वर्ष का बेटा हितेश अंदर सो रहा था। जब वह उठा तो उसे पता चला कि पापा आज एक नन्हें पक्षी को पकड़ कर लाए हैं तो उसकी खुशी का ठिकाना ही नहीं रहा। वह खुशी से चिल्लाने लगा कि हम इसे अपने घर पर ही पालतू बनाकर रखेंगे। उसने फरमाइश की कि कल ऑफिस से आते समय इसके लिए एक पिंजरा लेकर आना। लेकिन जब उसने उसका खून बहते देखा तो उसके मुँह से एकदम मायूसी का स्वर निकला–''पापा जी, यह ठीक तो हो जाएगा ना। चलो इसे डाक्टर के पास लेकर चलते हैं।'' खैर, मैंने उसे समझाया और हमने गर्म पानी में रुई भिगोकर उसकी सफाई की तथा जहां से खून बह रहा था वहां पर नियोस्पोरिन पाउडर का छिड़काव किया। उसे पानी पिलाने की कोशिश की गई।

बच्चा इतना छोटा था कि उसे अपने आप न तो खाना आता था और ना ही पानी पीना। यह देखकर हमें भी चिंता हुई कि अब इसे कैसे खिलाया जाए और कैसे पिलाया जाए। मेरी भाभी जी के मन में एक विचार आया और वह अंदर से एक ड्रॉपर लेकर आई। उसमें पानी भरकर जैसे–तैसे उसकी चोंच खोलकर उसके मुँह में दो बूंद डाली गई। होश आने पर बच्चा डर के मारे बहुत छटपटाने लगा। हमने कुछ समय के लिए उसे घर में ही एकांत में छोड़ दिया ताकि वह कुछ राहत महसूस कर सके। हम सब अपने–अपने काम में लग गए।

थोड़ी देर बाद जब नाश्ते के लिए बैठे तो उस बच्चे का खयाल भी आया कि इसे कैसे खिलाया जाए। हमने उसे कुछ खिलाने की काफी कोशिश की पर नाकामयाब रहे। एक तो वह डर के मारे छटपटा रहा था दूसरे वह चोंच में स्वयं उठाकर खाना नहीं जानता था। फिलहाल उसका खून बहना रुक चुका था। हमने फिर से उस पर नियोस्पोरिन पाउडर का छिड़काव किया ताकि उसके घावों पर अच्छे से यह पाउडर चिपक जाए तथा वह जल्दी ठीक हो जाए। कुछ सोच–विचार के बाद हमने निर्णय लिया कि चपाती के छोटे–छोटे टुकड़े दूध में भिगो दिए जाएं और फिर प्रयास किया जाए। थोड़ी देर बार रोटी के टुकड़े नरम पड़ गए तथा मैंने उस बच्चे को बाएं हाथ में अच्छे से पकड़ा तथा दाएं हाथ के अंगूठे व अंगुली की मदद से उसकी चोंच खोलने का प्रयास किया। जैसे ही उसने चोंच खोली तो मेरी श्रीमती जी ने तुरंत उसके मुँह में छोटा–सा टुकड़ा डाल दिया। उसने मुँह हिलाया और वह उस टुकड़े को अंदर ले गया। यह देखकर मेरा बेटा खुशी से उछल पड़ा और बोला ''देखा, पापा उसने खा लिया है, अब हमें कोई चिंता नहीं है, हम हर रोज इसको ऐसे ही खिलाएंगे।'' खैर, इसी तरह उसे कुछ रोटी के टुकड़े खिलाए गए।

बच्चे को भी अब तक यह आभास हो चुका था कि सब उसके अच्छे के लिए हो रहा है। वह अपने लिए एक कोने में मनपसंद स्थान भी खोज चुका था। मेरे बेटे ने इसी बीच सोच–विचार कर उसका नाम चूरू रख दिया। दिनभर उसको चूरू नाम से ही बुलाकर उसे जबरन कुछ खिलाया–पिलाया गया। अगले दिन तक उसे अपने नाम

का पता चल चुका था। अब जब भी हम उसे कहते 'चूरू, आओ, खाना खा लो', तो वह चूं, चूं की आवाजें करने लगता। दो दिनों में ही उसके घाव भर चुके थे। अब उसने घर के आगे के आंगन में बरसाती पानी की निकासी वाली पाइप में अपना घर बना लिया था। खा–पीकर वह वहीं आराम करता। शाम को तो पड़ोसी बच्चे भी उसको खाना खाते हुए देखने के लिए आ जाते और पूछते अब चूरू कैसा है।

पांचवें दिन बच्चे के पंखों का रंग उभर कर आने लगा तथा यह समझ आने लगा कि यह एक कबूतर का बच्चा है।

एक दिन जब मैं घर पहुँचा तो मुझे बताया गया कि दोपहर को यह काफी चूं, चूं की आवाज़ें कर रहा था। हमने छुपकर खिड़की से देखा कि वह खुशी से इधर–उधर दौड़ लगा रहा है और इसके पास कबूतर का एक जोड़ा आया हुआ है। वह उनके साथ खेल रहा था। बच्चा उनको बार–बार पंख फैला कर दिखा रहा था। सात दिनों में ही बच्चा काफी तंदुरूस्त हो गया था। अब जब भी हम उसको खाना देते तो मैं उसे अपने हाथ में लेकर ऊपर लहराता तो वह अपने पंख फड़फड़ाता और उड़कर जमीन पर आ जाता। कबूतर का वह जोड़ा भी दोपहर को हर रोज दरवाजा बंद होते ही उसके पास आ जाता। अब वह जमीन से उड़कर थोड़ी–सी ऊंचाई पर स्थित खिड़की पर आकर भी बैठने लग गया था। मुझे लगा कि अब यह एक दिन उड़ जाएगा। मेरे मन में आया कि इसे स्वयं तो अभी तक कुछ खाना नहीं आता, यह तो भूख से मर जाएगा।

अगले दिन हमने उसे खाना ना खिलाकर उसके सामने प्लेट में कुछ दाने व कटोरी में पानी रख दिया ताकि वह स्वयं खाने का प्रयास करे। परन्तु उसने कुछ नहीं खाया और शाम को जब मैं घर पहुँचा तो वह मेरी आवाज सुनते ही भूख के मारे मेरे पैरों के चारों ओर चक्कर लगाने लगा। मैंने उसे उठाया तो वह अपनी चोंच खोलकर खाना मांगने लगा। परन्तु मैंने भी उसको खाना स्वयं खाने के लिए प्रेरित करने का मन बना रखा था। मैंने एक हाथ में कुछ रोटी के टुकड़े व गेंहूँ के दाने रख लिए तथा उसकी चोंच को उन पर रखने लगा। परन्तु सफलता हाथ ना लगी। वह भूख के मारे मेरी ओर चोंच बार–बार खोल रहा था। मैंने भी अवसर मिलते ही जैसे ही उसने चोंच खोली तो जल्दी से एक दाना उसकी चोंच में रख दिया और वह उसे निगल गया। फिर यही क्रम दोहराया गया। कुछ फल के टुकड़े भी उसे ऐसे ही खिलाए गए और उसे छोड़ दिया गया।

अगली सुबह मैंने सोचा कि यह सारा दिन कल की तरह भूखा रहेगा, ऑफिस जाने से पहले उसे कुछ खाना खिला देता हूँ। मैं उसे पकड़ने गया तो हम सब यह देखकर हैरान थे कि वह तो उड़कर छत पर जा चुका था। उसे पकड़ने का प्रयास किया गया, परन्तु जैसे ही हम उसके पास पहुँचे वह छत से उड़कर सामने के मकान की दीवार पर जा बैठा। 'अब यह गया', मेरे मुँह से अचानक निकला। यह सुनते ही मेरा बेटा उदास हो गया और रोने लगा। मैंने उसे एक दूसरा पक्षी पिंजरे सहित लाने का आश्वासन देकर किसी तरह से चुप करवाया। वह शाम तक नहीं आया तथा कहीं अगल–बगल भी दिखाई नहीं दिया।

अगले दिन अर्थात् दसवें दिन सुबह हम उसे आंगन में देखकर हैरान थे। मेरी भाभी जी ने उसे कुछ खिलाने के लिए कहा परन्तु हमने उसके आगे कुछ फल, रोटी के टुकड़े व गेंहूँ के दाने रखने का फैसला लिया। छुपकर खिड़की से देखा और यह पाया कि वह अपने आप अब खाने का प्रयास कर रहा है। कुछ खाने व पानी पीने के बाद आधा दिन उसने वहीं विश्राम किया और फिर ऐसी उड़ान भरी कि आज तक लौटकर नहीं आया और मैं सोचता ही रह गया कि शायद उसके भाग्य में मेरे हाथों इतनी ही सेवा लिखी थी।

जीवन का सच भी तो यही है, कभी–कभार तो हम चाह कर भी अपनों की ही सेवा नहीं कर पाते और कभी बेगाने भी अपने बनकर सेवा करवा लेते हैं।

मेरी माँ

लवलीन सिंह
अधीक्षक

मेरे इस विषय पर कुछ लिखने का तात्पर्य अपनी माँ के गुणों का बखान करना कतई नहीं है। मैं केवल इतना ही चाहती हूँ कि इस लेख को पढ़ते हुए हर व्यक्ति अपनी माँ के चेहरे को ही सामने रखे।

माँ, कितना छोटा व कितना प्यारा सा शब्द है। सारी सृष्टि की मिठास जैसे इस एक शब्द में समाई है। पर आज अचानक इसकी याद क्यों? मुझे लगता है कि यह बहुत आवश्यक हो गया है। सारा विश्व एक अंधी दौड़ में लगा है। सब भाग रहे हैं, पर कहाँ, क्या लक्ष्य पाने को—यह कोई नहीं बता सकता। इस अंधी दौड़ का ही नतीजा है कि हम सब दुखी हैं, मायूस हैं।

एक देश अपने पड़ोसी देशों से, एक समाज या एक धार्मिक संगठन दूसरे संगठनों से, एक राज्य दूसरे राज्य से व एक व्यक्ति दूसरे से खुद को बेहतर साबित करना चाहता है। वास्तविकता चाहे कुछ भी हो, परंतु दूसरों को जो कुछ भी दिखे वह बढ़िया से बढ़िया दिखना चाहिए। अर्थात् आज का जमाना ढोंग और दिखावे का ही है। परंतु ऐसा करने के उपरांत भी मन को तसल्ली नहीं होती। मैं, तूँ, मेरा, तेरा—ये कुछ गिने—चुने शब्द ही सारी दुनिया में लड़ाई की जड़ हैं। दूसरों की तरक्की किसी भी शख्स को नहीं भाती। किसी ने सच ही कहा है—इंसान अपने दुख से उतना दुखी नहीं है जितना दूसरों को सुखी देखकर दुखी है। ऐसा लगता है जैसे चारों ओर स्वार्थ, ईर्ष्या, द्वेष, मन—मुटाव और दूसरे को धक्का देकर आगे बढ़ने की प्रवृत्ति ही चारों ओर छायी हुई है।

इन सब झगड़ों में भला माँ कैसे आ गई? बस ऐसे ही, चुपके से! यह हमारे दिलों में बसकर सब देख रही है और हद से ज्यादा सह रही है। शायद मेरी बात कुछ उलझी हुई सी प्रतीत हो रही हो, परंतु अपनी माँ को याद कीजिए और देखिए कैसे मन से सभी कठोर भावनाएं पिघल जाती हैं।

मेरा मानना है कि इंसान के पतन का कारण यही है कि वो अपनी माँ का सम्मान करना, उसे प्यार करना भूल गया है। वरना क्या कारण है कि अपनी माँ, जो हमारी जननी, हमारी प्रथम शिक्षक व सारे जीवनभर के लिए मार्गदर्शक रहती है, हम उसके द्वारा दिए गए संस्कारों को भूलकर अपनी ही

लगाई आग में जले जा रहे हैं। कौन माँ भला चाहेगी कि उसका बच्चा, जो कल एक अबोध शिशु था और हर बात के लिए उस पर आश्रित था, आज विनाशक बन बैठा है। माँ तो बस सबका भला चाहती है।

कहते हैं कि परमात्मा स्वयं हर स्थान पर उपस्थित नहीं रह सकता था इसलिए उसने माँ बनाई। सच में जब मैं अपनी माँ को याद करती हूँ तो मुझे इस कथन की सच्चाई का अहसास होता है। माँ का दिल अपने बच्चों की नसों में ही धड़कता है। हम कड़वे बोल बोलें या बुरा व्यवहार करें, माँ का दिल एक ऐसी अदालत है, जहां बच्चे के हर गुनाह को माफी मिल जाती है। परंतु ज्यों–ज्यों हम बड़े होते हैं, हम पर दुनियादारी का मैल चढ़ता जाता है और हम माँ जैसे छोटे से शब्द को भूलते जाते हैं। स्वयं ही सोच कर देखिए, जब तक हमारा समाज अपने बुजुर्गों को, अपनी माँ को अपने घर में सम्मानित जगह देता रहा, तब तक हम बहुत सुखी थे। परंतु ज्यों–ज्यों हमारी आँखों पर इस विश्व की चकाचौंध ने अपनी जगह बनाई, हम उसे भी भूल गए। नतीजा हमारे सामने है। आज भी जिस घर में बच्चे अपने बड़ों को, अपने माता–पिता को सम्मान देते हैं, वह घर धरती पर स्वर्ग है क्योंकि वे बच्चे निश्चय ही यह संस्कार आने वाली पीढ़ियों को देंगे।

अफसोस इस बात का है कि आज हम हर दृष्टि से पाश्चात्य रंग में रंगे हुए हैं। पूरा साल माँ की अनदेखी करते हैं। बस, ''मदर्स डे'' पर माँ को कोई छोटा–मोटा उपहार देकर ही हम अपने कर्तव्य की इतिश्री समझ लेते हैं।

खैर, मैं भी माँ क्या होती है, यह माँ बनने के बाद ही समझ पाई हूँ। माँ के लिए अपनी खुशी या गम के कोई मायने ही नहीं रह जाते। बस बच्चे खुश हैं, तो माँ का मन हर्षित है और उन पर कोई आंच आने की कल्पना भर से ही माँ का सुख–चैन गायब हो जाता है। आज जब कोई मेरी लेखनी की तारीफ करता है या फिर अच्छे कार्य की प्रशंसा होती है, तो मैं जानती हूँ कि ये संस्कार मेरी माँ के ही दिए हुए हैं। माँ जो अपने बच्चों के लिए करती है, उसका ऋण तो उतारने की बात सोची ही नहीं जा सकती। मन से हम यह स्वीकार ही कर लें तो यही बड़ी बात है।

आज जब मैं संपूर्ण विश्व को आग में जलते देखती हूँ और अपने ही सहयोगियों अथवा मित्रों को अपने से द्वेष करते हुए देखती हूँ, तो मेरा मन बहुत डर जाता है। परमात्मा को भला किसने देखा है, मेरा तो मन चाहता है कि मैं फिर से छोटी सी बालिका बन जाऊँ और अपनी माँ की गोद में दुबक जाऊँ। भला वहां कौन सी शय है, जो मुझे छू भी जाए। आज, खुद को कितना सुरक्षित महसूस कर सकती हूँ। परंतु जानती हूँ, यह संभव नहीं।

परमात्मा का शुक्र है कि मैं अब स्वयं भी एक माँ हूँ और मेरे पास गीली मिट्टी की तरह दो प्यारे–प्यारे बच्चे हैं। मैं भी अपनी माँ की तरह उन्हें संस्कार देते हुए बड़ा होते देखूंगी ताकि मेरी माँ भी मुझ पर गर्व महसूस कर सके।

यकीन मानिए, यह कल्पना ही बेहद सुखद है। आप भी कोशिश कर देखिए ।

''याद आ गई बरबस माँ की
जब देखा किसी मोमबत्ती को जलते हुए''

शेफाली वर्मा – एक प्रेरक जीवनगाथा

तृप्ति दीक्षित
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

शेफाली वर्मा भारत की अंतर्राष्ट्रीय महिला क्रिकेटर हैं। वे दाहिने हाथ की बल्लेबाज हैं और दाहिने हाथ से ही ऑफ स्पिन गेंदबाजी भी करती हैं। घरेलू क्रिकेट में वे हरियाणा से खेलती हैं। इस लेख में हम शेफाली वर्मा का जीवन परिचय दे रहे हैं। साथ ही उनके जीवन से जुड़े कुछ प्रसंगों के बारे में भी जानकारी दे रहे हैं।

शेफाली वर्मा का जन्म 28 जनवरी, 2004 को हरियाणा के रोहतक जिले में हुआ। इनके पिता का नाम संजीव वर्मा है। संजीव वर्मा को भी क्रिकेट खेलने का शौक था, परंतु पर्याप्त समर्थन और परिस्थितियों के अभाव में वे इस खेल में आगे नहीं बढ़ सके। लेकिन अपनी बेटी को उन्होंने क्रिकेट में आगे बढ़ाने के लिए पूरा प्रयास किया।

बेटी को शुरूआती ट्रेनिंग पिता ने खुद देना शुरू किया। लेकिन, प्रोफेशनल स्तर पर आगे बढ़ने के लिए उन्हें प्रोफेशनल ट्रेनिंग की जरूरत समझ में आई। शेफाली को क्रिकेट सिखाने में जो सबसे बड़ी दिक्कत उनके सामने आई, वह थी क्रिकेट सीखने के लिए एकेडमी पाने की। रोहतक में उस समय लड़कियों के लिए क्रिकेट एकेडमी नहीं थी। संजीव वर्मा ने लड़कों को क्रिकेट प्रशिक्षण देने वाली कई एकेडमियों में जाकर बात की लेकिन कोई एक लड़की को लड़कों के साथ प्रशिक्षण देने को तैयार नहीं हुआ।

इस समस्या से निपटने के लिए उन्होंने रास्ता निकाला कि शेफाली के बाल कटवाकर उसे लड़कों के चेहरे जैसा आकार दे दिया जाए। 9 साल की छोटी उम्र में शेफाली लड़कों की तरह बन गई और फिर उसे एक एकेडमी में क्रिकेट सीखने के लिए रख लिया गया। हालांकि कुछ समय बाद उनके स्कूल ने लड़कियों को क्रिकेट सिखाने की व्यवस्था शुरू कर दी। लेकिन शेफाली अपने उसी टॉमब्वाय लुक में ही रहती हैं।

संजीव के रिश्तेदारों ने उन्हें तरह–तरह की हतोत्साहित करने वाली बातें कहीं। किसी ने कहा कि महिला क्रिकेट में कोई भविष्य नहीं है, तो किसी ने लड़कों के साथ क्रिकेट खेलने को लेकर आगाह किया। लेकिन उनके पक्के इरादे डगमगाए नहीं और उन्होंने अपनी बेटी के लिए हरसंभव प्रयास जारी रखे।

आगे चलकर शेफाली को हरियाणा की महिला क्रिकेट टीम में शामिल कर लिया गया। फिर उन्हें भारत के वुमन मिनी आईपीएल यानी कि वुमन्स टी–20 चैलेंज टूर्नामेंट में मिताली राज के नेतृत्व वाली वेलोसिटी टीम में शामिल कर लिया गया। वेलोसिटी की टीम इस टूर्नामेंट के फाइनल में भी पहुँची, लेकिन हरमनप्रीत कौर के नेतृत्व वाली सुपरनोवा के हाथों हार गई।

घरेलू मैचों में अच्छे प्रदर्शन की बदौलत जल्दी ही शेफाली के लिए अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट के दरवाजे भी खुल गए। सितंबर–2019 में शेफाली को दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ टी–20 सीरीज के लिए भारतीय टीम में शामिल किया गया। उन्हें भारतीय टीम की पूर्व कप्तान मिताली राज के टी–20 क्रिकेट से संन्यास लेने पर टीम में शामिल किया गया।

24 सितंबर 2019 को उन्होंने अपना पहला टी–20 मैच खेला। इस तरह शेफाली की अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट में शुरूआत हुई और उसके पिता का अपनी बेटी को अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेटर बनाने का सपना साकार हुआ।

इस प्रकार से 15 साल 239 दिन की उम्र में उन्हें अपना पहला अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट मैच खेलने का मौका मिला। अंतर्राष्ट्रीय टी–20 क्रिकेट में सबसे कम उम्र में क्रिकेट खेलने का रिकॉर्ड भी शेफाली के नाम दर्ज हुआ। वैसे किसी भी तरह के अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट में भारत की ओर से सबसे कम उम्र में अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट खेलने के क्रम में वे दूसरे नंबर पर हैं।

इसके पहले गार्गी बनर्जी उनसे कम उम्र में भारत की ओर से अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट खेल चुकी हैं। गार्गी ने यह रिकॉर्ड वर्ष 1978 में 14 साल 165 दिन की उम्र में एकदिवसीय मैच खेलकर बनाया था। उल्लेखनीय है कि पुरूष क्रिकेट में सबसे कम उम्र में अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट खेलने का रिकॉर्ड सचिन तेंदुलकर के नाम दर्ज है जिन्हें 16 साल 238 दिन की उम्र में भारत की ओर से अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट खेलने का मौका मिला था।

पहले मैच में ओपनिंग करते हुए शेफाली का प्रदर्शन आशानुरूप नहीं रहा और वे शून्य रन बनाकर आउट हो गई। इस सीरीज के अगले दो मैच बारिश के कारण रद्द हो गए, लेकिन चौथे मैच में शेफाली ने अपना रंग दिखाया। एक अक्तूबर, 2019 को सूरत में खेले गए इस मैच में ओपनिंग करते हुए शेफाली ने सिर्फ 33 गेंदों में 46 रन बना डाले। इस पारी में उन्होंने 5 चौके और 2 छक्के जड़े।

बारिश के कारण 17–17 ओवर के इस मैच में शेफाली के ताबड़तोड़ 46 रनों की मदद से भारतीय टीम ने 140 रन बनाए। इसके जवाब में दक्षिण अफ्रीका की टीम 17 ओवर में 7 विकेट खोकर सिर्फ 89 रन ही बना सकी। मैन ऑफ द मैच का पुरस्कार हालांकि 13 रन देकर 3 विकेट लेने वाली पूनम यादव को मिला लेकिन शेफाली की बैटिंग ने उसे देश भर में सुर्खियों में ला दिया।

शेफाली, भारत के महान क्रिकेटर सचिन तेंदुलकर को आना आदर्श मानती हैं। शेफाली जब छोटी थी तो लाहली के मैदान में सचिन तेंदुलकर का जलवा उन्होंने देखा था। वर्ष 2014 चल रहा था। सचिन को देखने के लिए लाहली के मैदान पर लोग उमड़ पड़े थे। जितनी भीड़ मैदान के अंदर थी, उतनी ही मैदान के बाहर भी। तब शेफाली को लगा कि भारत में अच्छा क्रिकेटर होने के बहुत बडे मायने होते हैं। तभी से उन्होंने बड़ा क्रिकेटर बनने का सपना दिल में बैठा लिया था और कड़ी मेहनत शुरू कर दी थी।

सबसे पहले वे 2018–19 में अंतर्राष्ट्रीय महिला टी–20 टूर्नामेंट में चर्चा में आई। इसमें उन्होंने नागालैंड के खिलाफ 56 गेंद पर 128 रन की तूफानी पारी खेली थी। इसके बाद इसी साल आईपीएल के दौरान महिला टी–20 चैलेंज में उन्होंने अंतर्राष्ट्रीय खिलाड़ियों के खिलाफ 31 गेंदों पर 34 रन बनाकर अपना दावा मजबूत किया। भारतीय महिला क्रिकेट टीम की युवा खिलाड़ी शेफाली वर्मा ने अपने शानदार प्रदर्शन से तहलका मचा दिया है। उन्होंने वेस्टइंडीज के खिलाफ खेली जा रही टी–20 सीरीज में 24 घंटे के भीतर दो धमाकेदार अर्धशतक ठोक दिए। शेफाली भारतीय टीम में डेब्यू करने वाली दूसरी सबसे कम उम्र की खिलाड़ी हैं।

शेफाली ने तोड़ा सचिन का 30 साल पुराना रिकॉर्ड

पंद्रह साल की शेफाली वर्मा अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट में अर्द्धशतक जड़ने वाली भारत की सबसे युवा खिलाड़ी बन गई हैं। 15 साल की शेफाली ने वेस्टइंडीज में संट लूसिया के डैरेन सैमी नेशनल क्रिकेट स्टेडियम में खेले गए पहले टी–20 अंतर्राष्ट्रीय मैच में यह उपलब्धि हासिल की। उन्होंने सचिन तेंदुलकर का 30 साल पुराना रिकॉर्ड तोड़ दिया। शेफाली ने यह उपलब्धि 15 साल ओर 285 दिन की उम्र में हासिल की। इस तरह उन्होंने दिग्गज क्रिकेटर सचिन तेंदुलकर को पीछे छोड़ा जिन्होंने अपना पहला टेस्ट अर्द्धशतक 16 साल और 214 दिन की उम्र में बनाया था। हरियाणा की इस युवा खिलाड़ी ने सूरत में दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ अपने कैरिअर के दूसरे टी–20 मैच में भी 46 रनों की पारी खेली थी।

शॉर्टकट

महेन्द्र धनिया
अधीक्षक

एक बार की बात है कि एक दंपत्ति घर से थोड़ी सी दूरी पर टहल रहे थे । अचानक उनका ध्यान एक महात्मा की कुटिया पर पड़ा। उनको विदित था कि यह एक सिद्ध महात्मा हैं। उनके मन में आया कि वे आज महात्मा जी के दर्शन करके ही घर चलेंगे। अतः वे उनके दर्शनार्थ कुटिया की ओर जाने लगे। रास्ते में थोड़ी सी दूरी पर गरीब दंपत्ति ने देखा कि कूड़े के ढेर पर सोने का चिराग पड़ा हुआ है। दंपत्ति ने महात्मा से पूछा तो महात्मा ने बताया कि यह तीन इच्छाएं पूरी करने वाला बेकार चिराग है और बहुत खतरनाक भी है। जो भी इसको उठाकर ले जाता है, वापस यहीं कूड़े में फेंक जाता है।

दंपत्ति गरीब थे और उन्होंने सबसे पहले दस लाख रुपये मांग कर चिराग का टेस्ट करने की सोची। जैसे ही उन्होंने रुपए मांगे तभी दरवाजे पर दस्तक हुई। जाकर दरवाजा खोला तो एक आदमी रुपयों से भरा बैग और एक लिफाफा उनको थमा गया। लिफाफे में पत्र था जिसमें लिखा हुआ था कि मेरी कार से टकराकर आपके पुत्र की मृत्यु हो गई है जिसके पश्चाताप स्वरूप में यह दस लाख रुपये भेज रहा हूँ। मुझे माफ कीजिएगा।

यह सुनते ही पत्नी दहाड़ें मारकर रोने लगी। तभी पति को खयाल आया और उसने चिराग से दूसरी इच्छा बोल दी कि उसका बेटा वापिस आ जाए। थोड़ी देर बाद दरवाजे पर दस्तक हुई और पूरे घर में अजीब–सी आवाजें आने लगी। घर के बल्ब तेजी से जलने–बुझने लगे। उनका बेटा प्रेत बनकर वापस आ गया था। दंपत्ति ने बेटे का प्रेत रूप देखा तो वे बुरी तरह डर गए और हड़बड़ी में चिराग से तीसरी इच्छा के रूप में प्रेत योनी से पुत्र की मुक्ति मांग ली।

बेटे की मुक्ति के बाद वे रातों–रात आश्रम पहुँचे और चिराग को कूड़े के ढेर पर फेंककर दुखी मन से वापस लौट आए।

कहानी का आशय है कि हमें जो भी मिला है, हमें उसमें ही संतुष्ट रहना चाहिए और सफलता के लिए शॉर्टकट नहीं अपनाना चाहिए क्योंकि सफलता का कोई शॉर्टकट नहीं होता। सफलता सिर्फ संघर्ष से ही मिलती है। ऐसे कितने ही उदाहरण हैं कि पैसा कमाने के लिए जब शॉर्टकट रास्ता अपनाते हैं तो वो बर्बाद होकर रह जाते हैं। मनुष्य को जीवन में सफलता पाने के लिए मेहनत और लगन के पथ पर ही अग्रसर होना चाहिए। जीवन में अनिश्चय की स्थिति सफलता के मार्ग में सबसे बड़ा गतिरोधक होती है। कहा भी गया है कि –

यो ध्रुवाणि परित्यज्य अध्रवाणि निषेवते ।
ध्रुवाणि तस्य नश्यन्ति अध्रवाणि नष्ट मेव हि ।

अर्थात् जो निश्चित को छोड़कर अनिश्चय का आश्रय लेते हैं, उनका निश्चित भी नष्ट हो जाता है और अनिश्चित तो लगभग नष्ट के समान ही है। दृढ़ निश्चय ही जीवन में सफलता की एकमात्र गारंटी है ।

कविता

मनुष्य जब किसी सामाजिक या व्यक्तिगत परिस्थिति से आहत होकर एकांत में अपने विचारों की गहराई में डूब जाता है और अपने भावों को सशक्त शब्द देकर उन्हें सुर और लय प्रदान करने की कोशिश करता है तो कविता का सृजन होता है, जिससे विभिन्न राग और रसों की उत्पत्ति होती है। अल्प शब्दों में बहुत कुछ कह देना ही कविता की शक्ति एवं सुंदरता है जिसे सुनकर व पढ़कर पाठकों एवं श्रोताओं को असीम आनंद की अनुभूति होती है।

क्षेत्रीय कार्यालय, चंडीगढ़ के कार्मिकों ने भी अपने भावों को काव्य रस में रंजित कर साकार रूप देने का प्रयास किया है। आइए हम भी इसका आनंद लेते हैं.....

कारवां

समय ने समय को समय पर सिखलाया,
कि बदलना भी जरूरी है,
ख्वाहिशें हज़ार थी,
कुछ पूरी हैं, कुछ अधूरी हैं,
बदलते मौसम ने भी सिखलाया कि
वक्त एक सा नहीं रहता,
कल कम थे, मायूसी थी,
आज सफलता से चेहरा नूरी है,
गुजर रहा है कारवां, आगे भी गुज़र जाएगा,
कर्म करो अपना, बदलाव अवश्य आएगा।
जिंदगी के हर मोड़ पर साथ,
कुछ रिश्ते नए कुछ पुराने थे,
धर से निकले जब कदम बाहर,
कुछ चेहरे जाने व कुछ अनजाने थे,
परन्तु बाहर निकलना भी जरूरी था,
इज्जत और पैसे भी तो कमाने था,
बचपन ही अच्छा था, पूरा आस्मां और जहां
अपना था, वाह वे भी क्या खूब ज़माने थे,
गुज़र रहा कारवां, आगे भी गुज़र जाएगा,
बीता पल कहां लौट कर वापिस आएगा।

अमित बहादुर
सहायक

कभी परीक्षाएं भी डराती थीं,
अब तो हर दिन एक परीक्षा है,
हर दिन गुज़रता है खुद को साबित करने में,
अजीब–सी हुई पड़ी मनोदशा है,
सहूलियत सब मौजूद हैं, फिर भी,
मन असंतुष्ट है, जाने क्या वजह है,
सिर्फ अपना गम लगे ज्यादा, परन्तु,
हाल सभी का एक जैसा है,
गुज़र रहा है कारवां, आगे भी गुज़र जाएगा,
कभी तो बदलेगा मौसम कभी तो सावन आएगा।
जिदंगी के अंतिम चरणों में, ख्वाहिश यही
कि साथ अपनों का हो,
एक इज्ज़तदार मुकाम पर जिंदगी हो,
और बड़ा–सा महल सपनों का हो,
रुकसत हों जब जहां से हम,
दुश्मन भी फूल चुनने आएं,
नाम इतना बड़ा हो ऐ मालिक,
कि लोग हमारे भी किस्से सुनने आएं,
रहमत बनी रहे खुदा की यह पल भी जरूर आएगा,
गुज़र रहा है कारवां, आगे भी गुज़र जाएगा।

फलसफा जिंदगी का

वकील सिंह
सहायक

ख्वाहिश ही नहीं अब, मुझे यूं मशहूर होने की,
आप मुझे पहचानते हो, बस इतना ही काफी है।
अच्छों ने अच्छा और बुरों ने बुरा जाना मुझे,
क्योंकि जिसकी जितनी जरूरत थी असल में,
उसने ठीक केवल उतना ही पहचाना मुझे।

जिंदगी का फलसफा भी कितना अजीब है,
शाम कटती नहीं व साल गुजरे जा रहे हैं,
मैंने माना यह जिंदगी एक अजीब–सी दौड़ है,
जीत जाओ तो कई अपने ही पीछे छूट जाते हैं,
और हार जाओ तो अपने ही पीछे छोड़ जाते हैं।

मैंने समंदर से सीखा है जीने का सलीका,
शांत रहकर सब्र से दिल जीत लेना सबका,
ऐसा भी नहीं है कि मुझ में कोई ऐब है नहीं,
पर सच कहता हूँ मुझ में कोई फरेब है नहीं,
जाने क्यूं जलते हैं मेरे अंदाज से मेरे दुश्मन,
मैंने ना दोस्त बदले और ना मोहब्बत बदली।

एक घड़ी खरीद कर हाथ में क्या बांध ली,
ना जाने क्यूं वक्त पीछे ही पड़ गया मेरे,
बस सोचा था घर बना बैठूंगा सुकून से,
पर घर की जरूरतों ने मुसाफिर बना डाला,
अब सुकून की तो बात ही मत कर ए मेरे दोस्त,
क्योंकि बचपन वाला वो इतवार अब नहीं आता।

जीवन की भागदौड़ में वक्त के हाथ रंगत खो जाती है,
हँसती–खेलती सी यह जिंदगी भी बस आम हो जाती है,
याद है बचपन का वो सवेरा जब हँस कर उठते थे हम,
और आज कई बार बिना मुस्कुराए ही शाम हो जाती है।

कितने दूर निकल गए हम रिश्तों को निभाते–निभाते,
और खुद को ही खो दिया हमने अपनों को पाते–पाते,
बेवजह लोग कहते हैं हम रहते हैं बहुत मुस्कुराते
पर हकीकत यह है थक गए हम दर्द छुपाते–छुपाते,
मालूम तो उनको भी है कोई मोल नहीं है मेरा,
पर अब कुछ खास लोगों से ही वास्ता है मेरा।

देख बारिश का यो मौसम

देख बारिश का यो मौसम,
आज मैं छात पै खड़्या हूँ।
चाहे बादलां तै पूछ लिए,
मैं तेरी बाट में खड़्या हूँ।

ठंडा मौसम काले बादल,
पड़ै मीठी–2 बौछार सैं,
गलियां में बालक रुक्के मार–2,
पूरा उधम ठारे सैं।
मन में उदासी सी हो री,
भर्या जज्बात में खड़्या हूँ।
चाहे बादलां तै पूछ लिए,
मैं तेरी बाट में खड़्या हूँ।

तब आवेगा मजा बारिशों का,
जब इकट्ठे बारिश में भीजांगे,
एक–दूसरे की तरफ देख–देख कै,
मन ही मन में रीझांगे।
कदे तो आवेगा दिन वो सुथरा,
बस मैं इसे आस में खड़्या हूँ ।।
चाहे बादलां तै पूछ लिए,
मैं तेरी बाट में खड़्या हूँ।

आती ए रह्वै चलो बारिश तो या,
बेरा नी तू कद सी आवेगी,
कदे लागे बाट देख–देख कै,
जिंदगी निकल या जावेगी ।
'सोनू' देखै सुपने बड़े–बड़े,
ज्यांतै बंद आंख करे खड़्या हूँ।
चाहे बादलां तै पूछ लिए,
मै तेरी बाट मैं खड़्या हूँ ।

संदीप पांचाल
बहुकार्य स्टाफ

सभी रजिस्टरों, उपस्थिति पंजिका, फाइल कवरों, नोट पैड, फोल्डर आदि पर शीर्षक द्विभाषी प्रिन्ट करवाएं/लिखे जाएं।

खोये हुए लम्हें

हर उठा हुआ हाथ, दया का नहीं होता,
हर गिरा हुआ घूंघट, हया का नहीं होता,
कुछ दिए बुझ जाते हैं, अपनी गलतियों से,
हर बार कसूर हवा का नहीं होता,

मैं यादों का किस्सा खोलूं तो,
कुछ दोस्त बहुत याद आते हैं।
मैं गुजरे पल को सोचूं तो,
कुछ दोस्त बहुत याद आते हैं,

अब जाने कौन सी नगरी में,
आबाद है जाकर मुद्दत से,
मैं देर रात तक जागूं तो,
कुछ दोस्त बहुत याद आते हैं।

कुछ बातें थी फूलों जैसी,
कुछ लहजे खुशबू जैसे थे,
मैं शहर–ए–चमन रहलूं तो,
कुछ दोस्त बहुत याद आते हैं।

सब की जिंदगी बदल गई,
किसी को नौकरी से फुर्सत नहीं,
किसी को दोस्तों की जरूरत नहीं,
सारे यार गुम हो गए,
तू से "तुम" और "आप" हो गए,
मैं गुजरे पल को सोचूं तो,
कुछ दोस्त बहुत याद आते हैं।

धीरे–धीरे उम्र कट जाती है,
जीवन यादों की पुस्तक बन जाती है,
किसी की याद बहुत तड़पाती है,
और कभी यादों के सहारे जिदंगी कट जाती है,
किनारों पे समुन्दर के खजाने नहीं आते,
फिर जीवन में दोस्त पुराने नहीं आते।

जी लो इन पलों को हँस के दोस्त,
फिर लौट के दोस्ती के जमाने नहीं आते,
कतरा–कतरा शबनम यूं गिरती रही रात भर,
सोचा मिल जाएगी मोहब्बत किसी राह पर,
तरस ना खाया किसी ने उसके जज्बात पर,
बिखर गई बेखबर काटों की बिसात पर।

जगदीश कुमार गिल
सहायक

ब्रो एण्ड सिस

माँ से पहले बनाई मम्मी हमने,
और फिर मम्मी को मोम बना दिया......
हर अंधेरे से निकाला था उसने हमें,
पर रोशनी दिखाते ही हमने उसे बुझा दिया......
झूठे हो गए यहाँ के लोग सभी,
और झूठे ही वादे रह गए......
जैसे ब्रदर से रह गया ब्रो,
और सिस्टर से रह गई सिस,
उसी तरह रिश्ते भी आधे रह गए......

हर्ष जिंदल
प्रवर श्रेणी लिपिक

टहनी की तरह पाला जिस बाप ने हमें
खड़े होते ही हमने उसकी भी जड़ें काट दी......
वह खुद तो आया ना किसी के हिस्से,
पर उसकी कमाई हर चीज़ फट से बांट ली......
डोर तो टूट गई लगाव की सबसे,
बस मतलब के ही धागे रह गए......
जैसे ब्रदर से रह गया ब्रो,
और सिस्टर से रह गई सिस,
उसी तरह रिश्ते भी अधूरे रह गए......

कभी दादा–दादी से ना सुनी कहानियां,
प्यार वैसा अब ना कहीं बरसता होगा.......
ऐसे अपनाई है हमने यह विदेशी सभ्यता,
एक शब्द माँ भी अब तो खुद को तरसता होगा.......
हर कोई समझे खुद को राजा यहाँ,
और बाकी सब शतरंज के प्यादे रह गए.....
जैसे ब्रदर से रह गया ब्रो,
और सिस्टर से रह गई सिस,
उसी तरह रिश्ते भी आधे रह गए......

जिन भाई–बहनों पर विरासतें कुर्बान थी,
उनसे आज हिस्से के लिए लड़ते हैं लोग.....
ऐसी कामयाबी का भी क्या फायदा दोस्तों,
जहाँ अपनों को रौंद ऊपर चढ़ते हैं लोग.....
वफा निभाने की किसी की नीयत ना रही,
बस मतलब से भरे इरादे रह गए.....
जैसे ब्रदर से रह गया ब्रो,
और सिस्टर से रह गई सिस,
उसी तरह रिश्ते भी आधे रह गए......

जगदीश चन्द (सूर्यवंशी)
सहायक

हौंसला

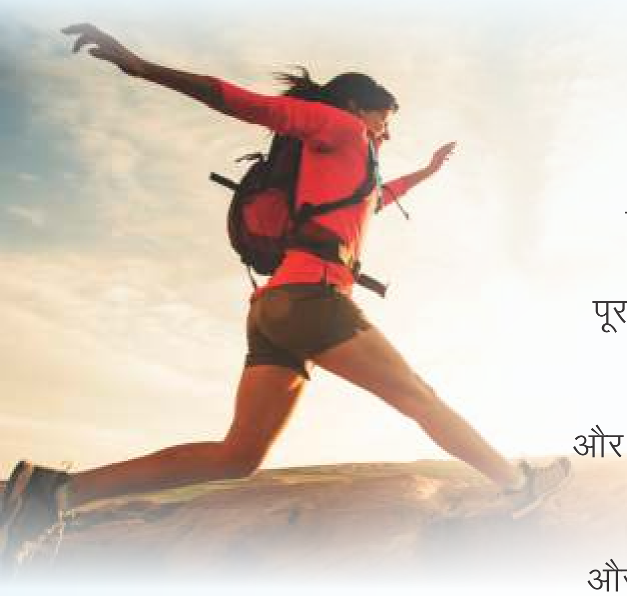

थक कर न बैठ,
ए मंजिल के मुसाफिर,
मंजिल भी मिलेगी और
मिलने का मजा भी आएगा,
नित नए सपने तू देख,
पूरा करने का उन्हें रख हौंसला,
अगर लक्ष्य तेरा है बुलंद,
तो सपने भी सच होंगे,
और सच हाने का मजा भी आएगा,
ए मंजिल के मुसाफिर,
मंजिल भी मिलेगी,
और मिलने का मजा भी आएगा।

वक्त

हर खुशी है, लोगों के मन में,
पर हँसने के लिए वक्त नहीं,
माँ की लोरी का एहसास तो है,
पर माँ को माँ कहने का वक्त नहीं,
सारे रिश्ते मोबाइल में हैं,
पर दोस्ती के लिए वक्त नहीं
पैसों की दौड़ में ऐसे दौड़े,
कि थकने तक का वक्त नहीं,
तू ही बता ए जिन्दगी,
इस जिन्दगी का क्या होगा,
कि जीने के लिए भी वक्त नहीं।

रेखा
सहायक

बेटी

दुनिया का भी दस्तूर है जुदा, तू ही बता ये क्या है खुदा?
लक्ष्मी–सरस्वती हैं चाह सभी की, क्यों दुआ कहीं ना इक बेटी की?

सब चाहे सुन्दर जीवन संगिनी, फिर क्यों बेटी से मुँह फेरे,
लक्ष्मी रूपी बिटिया को छोड़, धन–धान्य को क्यों दुनिया हेरे।

क्या बेटे ही हैं जो केवल, दुनिया में परचम लहरा पाते,
ना होती बेटी जो इस जग में, तो लल्ला फिर तुम कहाँ से आते?

वीरता की कथा में क्यों अकसर, बेटों की कहानी कही जाती,
शहीदे आजम जितनी ही वीर, क्यों झाँसी की बेटी भुलाई जाती।

बेटे की चाहत में अंधा होकर, क्यों छीने उसके जीवन की आस,
बेटी जीवन का समापन कर, क्यों भरे बेटे के जीवन में प्रकाश।

इतिहास गवाह उस औरंगजेब का, शाहजहाँ नजरबंद करवाया,
क्या भूल गया उस कल्पना को, जिसने चंदा पर परचम लहराया।

पुरुष प्रधान के इस जग में, क्यों बेटे की चाह में तू जीता,
मत भूल! बेटी के लिए जनने वाली से पहले, पहला प्यार होता है पिता।

दुनिया का भी दस्तूर है जुदा, तू ही बता ये क्या है खुदा?
लक्ष्मी–सरस्वती हैं चाह सभी की, क्यों दुआ कहीं ना इक बेटी की?

कार्यालय में टिप्पणी, पत्रों एवं उपस्थिति पंजिका आदि सभी प्रकार के दस्तावेजों में हस्ताक्षर अनिवार्यतः हिन्दी में ही किए जाएं।

बचपन कहाँ है?

नेहा भारद्वाज
प्रवर श्रेणी लिपिक

मैं आज देखती हूँ कि बचपन कहाँ है?
यहाँ है? वहाँ है?
ना जाने कहाँ है?

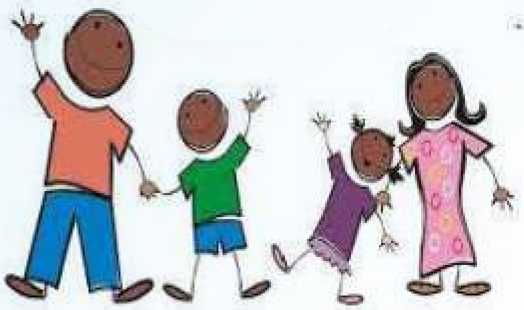

नन्हे नन्हे कदमों से जब,
धरती नापा करते थे।
सागर की अविरल तरंग से
कल–कल कर चंचल बहते थे
ना वो उमंग है ना वो हौंसला है,
मैं आज देखती हूँ कि बचपन कहाँ है?

वे पेड़ भी नहीं रहे अब,
वे डालियों पर झूलती
किलकारियां भी नहीं रही।
न वो महक न वो आबो हवा है,
मैं आज देखती हूँ कि बचपन कहाँ है?

शान्त हो गया मानो अब
पकड़म पकड़ाई का शोर,
बंद सा हो गया है
खो खो और कब्बडी का शोर
संगणक के बटन पर जीवन थमा है,
मैं आज देखती हूँ कि बचपन कहाँ है?

वो परियां नहीं रही अब तो
न वो राजा–रानियां रही
दादी के किस्से न रहे
नानी की वो कहानियाँ ना रही।
न वो प्रेम वो आशीष न वो सदा है,
मैं आज देखती हूँ कि बचपन कहाँ है?

स्कूल की वो टोलियाँ भी
मानो बस में सिमट गयी हैं।
अ आ इ की बोलियां भी,
मानो अब घिस पिट सी गयी हैं।
न वो तख्ती है न वो छूही न वो ककहरा है,
मैं आज देखती हूँ कि बचपन कहाँ है?

कुछ और तो नहीं है बस
मेरी कलम का आगाज़ है,
सो गया है नींद में जो
उस बचपन की आवाज़ है
बचा लो, इसी में जगत का भला है,
मैं आज देखती हूँ कि बचपन कहाँ है?

यात्रा वृत्तान्त

गगन चूमते
पर्वत खड़े प्रहरी से शांत
मनोहर झरने गिर रहे बिना विश्राम
बह रही कहीं सरिता बिना आराम
कहीं बंजर कहीं मधुबन प्रकृति के काम

आज के इस युग में आवागमन के साधनों के चलते धरती सिमट कर रह गई है तथा हमें देश–विदेश में घूमने का सुनहरा अवसर प्राप्त हुआ है। हर देश में कुछ मानव निर्मित, तो कुछ प्रकृति जनित पर्यटन स्थल हैं जिनको देखना अपने आप में एक सौभाग्य है।

जहाँ इन पर्यटन स्थलों की यात्रा हमारे ज्ञान में वृद्धि करती है, वहीं हमें एक–दूसरे की संस्कृति व रहन–सहन की जानकारी भी मिलती है। आइए उन अनुभवों का हम भी लाभ उठाते हैं...

यथासंभव मसौदे मूलतः हिन्दी में ही तैयार किए जाएं।

यूरोप यात्रा – दिल से

साक्षी शर्मा
प्रवर श्रेणी लिपिक

आए, ठहरे और रवाना हो गए, जिन्दगी क्या है? सफर की ही बात है।

जिन्दगी और यात्रा एक ही सिक्के के दो पहलू हैं –

जिंदगी हर हालत में चलती है।
यात्रा हर हालत में जारी रहती है।

यात्रा के इस प्रेम को अपनाते हुए मैंने और मेरे पति ने विदेश यात्रा का अनुभव लेने का निर्णय लिया। नवम्बर, 2019 में हमने सात महाद्वीपों में से एक महाद्वीप यूरोप जाने का निश्चय किया तथा अपना यात्रा कार्यक्रम बना लिया। यूरोप में तकरीबन 50 देश हैं तथा विभिन्न भाषाओं का सुंदर संगम है। यात्रा कार्यक्रम बनाते हुए हमने दो देशों में जाने का निश्चय किया – **फ्रांस व इटली**।

फ्रांस पश्चिमी यूरोप में स्थित एक देश है जिसकी राजधानी पेरिस है। हम सबसे पहले पेरिस पहुँचे तथा वहाँ के आकर्षक स्थलों का भ्रमण किया –

1. **एफिल टॉवर:** एफिल टॉवर पेरिस में स्थित एक लौह टॉवर है। इसका निर्माण 1889 में शैम्प दे मार्स में सीन नदी के तट पर हुआ था। इसकी रचना गुस्ताव एफिल के द्वारा की गई जिसके नाम पर टॉवर का नामकरण हुआ। आज की तारीख में टॉवर की ऊँचाई 1063 फीट है। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर ताज महल जैसे भारत की पहचान है, वैसे ही एफिल टॉवर फ्रांस की पहचान है। सन् 1889 में फ्रांसीसी क्रांति के शताब्दी महोत्सव के अवसर पर वार्षिक मेले का आयोजन कर सरकार ने टॉवर बनवाया। 300 मजदूरों ने मिलकर एफिल टॉवर को 2 साल 2 महीने और 55 दिन में पूरा किया। हर रात को अंधेरा होने के बाद एफिल टॉवर को रोशन किया जाता है जिसकी झिलमिलाहट देखने लायक होती है।

2. **लूव्र संग्रहालय:** लूव्र संग्रहालय पेरिस का एक ऐतिहासिक संग्रहालय है जिसे विश्व में सर्वाधिक दर्शक देखने आते हैं। इसमें प्रागैतिहासिक काल से लेकर 19वीं सदी तक की वस्तुएं संग्रहित हैं। इसका क्षेत्रफल लगभग 72735 वर्ग मीटर है तथा इसमें लगभग 38000 वस्तुएं संग्रहित हैं। लियोनार्डो द विंची की मोनालिसा नामक जगत प्रसिद्ध पेंटिंग इस संग्रहालय का विशेष आकर्षण है।

3. **डिज्नीलैंड पेरिस:** डिज़नीलैंड पेरिस, यूरो डिज्नी रिजॉर्ट, फ्रांस में एक मनोरंजन स्थल है, जो पेरिस से 32 कि.मी. पूर्व में स्थित एक शहर है। यह 1992 में शुरू हुआ तथा इसका क्षेत्रफल 19.42 कि.मी. है। इसकी मालिक 'द वाल्ट डिज्नी' कंपनी है जिसके चरित्र जैसे मिकी माउस, डोनाल्ड डॅक आदि को देख कर हमने अपने

बचपन को रंगीन बनाया है। यहाँ सालाना आने वाले लोगों की संख्या–14.8 मिलियन है (2017)। यह स्थान हमारा सबसे प्रिय स्थान रहा जहाँ हमने तकनीक तथा मनोरंजन के एक विशेष संगम का आनंद लिया।

इटली भ्रमण: फ्रांस को विदा कर हम अगले दिन इटली पहुँचे। इटली की राजधानी रोम है जहाँ से हमने अपना भ्रमण शुरू किया।

1. **कोलोसियम:** इटली देश के रोम नगर के मध्य निर्मित रोमन साम्राज्य का सबसे विशाल एलिप्टिकल एंफीथियेटर है। इसे रोमन आर्किटेक्चर और इंजीनियरिंग का नमूना माना जाता है। अंडाकार कोलोसियम की क्षमता 50000 दर्शकों की थी जो उस समय में साधारण बात नहीं थी। यहाँ मात्र मनोरंजन के लिए खूनी लड़ाइयां हुआ करती थी। यूनस्को द्वारा इसका चयन 'विरासत' के रूप में किया गया है । आज भी हर गुड फ्राइ डे को पोप यहाँ एक मशाल जलूस निकालते हैं। इसे दुनिया के 'नए सात अजूबों' की सूची में शामिल किया गया है।

2. **ट्रेवी फाउंटेन:** ट्रेवी फाऊंटेन रोम में एक फव्वारा है जिसे निकाला सालवी द्वारा बनवाया गया था। यहाँ सिक्के फेंकने की प्रथा प्रचलित है जिसमें सिक्कों को दाएं हाथ से बाएं कंधे के ऊपर से फेंक कर मन्नत मांगी जाती है। एकत्रित यूरोज़ को रोम के जरूरतमंद लोगों में बांट दिया जाता है ।

इन जगहों के अलावा हमने रोम में स्पेनिश स्टेप्स पियाजा नवोना, पियाणा दी स्पगना, पालटाइन हिल, बासीलीक ऑफ संट पीटर आदि जगहों का भ्रमण किया तथा इनके इतिहास को जाना। फ्लोरेंस इटली का अन्य मुख्य शहर है जिसे अपने संग्रहालय तथा वास्तुकला से जाना जाता है। यहाँ हमने अफीजी गैलरी और पलाजो पिट्टी आदि जगहों का भ्रमण किया। वेनिस अन्य शहर है जिसकी प्राकृतिक खूबसूरती एक कलाचित्र के समान दिखाई देती है। यहाँ हमने गेंडोला नाव में सवार होकर इस शहर की खूबसूरती का आनंद लिया। यहाँ पिज्जा, पास्ता तथा जिलेटो खाने में प्रमुख हैं जिनका हमने आनंद लिया।

मैं कहना चाहूंगी कि विदेशी संस्कृति, वहाँ की भाषाएँ, वहाँ का खाना–पीना भिन्न होने के कारण हमारा यह यूरोप दर्शन का दौरा बहुत ही रोमांचक व अनुभवपूर्ण रहा। अंत में यही कहना चाहूंगी–

मुसीबत लाख आएंगी जिन्दगी की राहो में, रखना तू सबर।
मिल जाएगी तुझे मंजिल, एक दिन, बस जारी रखना तू सफर।।

हिन्दी में प्राप्त पत्रों का उत्तर अनिवार्यतः हिन्दी में ही दिया जाए।

गतिविधियां

गणतंत्र दिवस समारोह 2020 की झलकियाँ

नौनिहालों की नज़र में – गणतंत्र दिवस

स्वच्छता ही सेवा कार्यक्रम की झलकियाँ

पंजाब एवं चंडीगढ़ क्षेत्र के पेंशनरों के साथ बैठक की झलकियाँ

सभी प्रकार के ईमेल हिन्दी में ही भेजे जाएं तथा उनका समुचित रिकॉर्ड रखते हुए उन्हें पत्राचार के आंकड़ों में शामिल करें।

हिन्दी कार्यशालाएँ

अग्निशमन अभ्यास

बारहवीं आंचलिक खेल कूद प्रतियोगिताओं में क्षेत्रीय कार्यालय, पंजाब एवं चंडीगढ़ की उल्लेखनीय प्रतिभागिता

दिनांक 25.11.2019 से 29.11.2019 तक उत्तराखंड क्षेत्र के देहरादून शहर में बारहवीं आंचलिक खेलकूद प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। पंजाब क्षेत्र के 65 कर्मचारियों ने इन प्रतियोगिताओं में बढ़–चढ़ कर भाग लिया। इन प्रतियोगिताओं में पंजाब क्षेत्र के अलावा दिल्ली, जम्मू, उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश, लुधियाना तथा जालंधर के विभिन्न कार्यालयों से प्रतिभागी शामिल हुए। इन आंचलिक खेलकूद प्रतियोगिताओं में पंजाब क्षेत्र का प्रदर्शन काफी सराहनीय रहा।

महिला वर्ग

खेल का नाम	विजेता/उपविजेता	प्रतिभागी का नाम (सुश्री)
टेबल–टेनिस (एकल)	विजेता	सविता डोभाल
टेबल–टेनिस (डबल)	विजेता	सविता डोभाल, सुमन लता
टेबल–टेनिस (टीम चैंपियनशिप ट्राफी)	विजेता	सविता डोभाल, सीमा रावत सुमन लता, जसवीर कौर
शतरंज	उप–विजेता	सीमा रावत
कैरम (डबल)	उप–विजेता	सुमन लता, मनीषा

पुरूष वर्ग

खेल का नाम	विजेता/उपविजेता	प्रतिभागी का नाम (श्री)
बॉलीबाल	विजेता	ओंकारदीप सिंह, योगेश कुमार, राजिन्द्र सिंह रावत, राकेश कुमार डोगरा राजेश कुमार, अमित बहादुर, प्रकाश चंद चमन सिंह, सुनील कुमार, भव्य कुमार बिश्नोई, कुलविन्द्र सिंह, नंद लाल
बैडमिंटन (टीम चैंपियनशिप ट्राफी)	विजेता	विवेक कुमार, जयंक आहूजा धर्मेन्द्र राणा, सुरेन्द्र, संदीप पांचाल
बैडमिंटन (एकल)	उप–विजेता	विवेक कुमार
बैडमिंटन (डबल)	उप–विजेता	विवेक कुमार, जयंक आहूजा

हमारे खिलाड़ी – कैमरे की नज़र से

एसिक पखवाड़ा 2020–स्वास्थ्य जांच व जागरुकता शिविरों का आयोजन

एसिक पखवाड़ा 2020–स्वास्थ्य जांच व जागरुकता शिविरों का आयोजन

एसिक पखवाड़ा 2020–प्रेस कवरेज

कर्मचारी राज्य बीमा निगम मंडी गोबिंदगढ़ ने सह-स्वास्थ्य जांच शिविर प्रति किया जागरूक

कर्मचारी राज्य बीमा निगम मंडी गोबिंदगढ़ ने लगाया जागरूकता सह-स्वास्थ्य जांच शिविर

ਕਰਮਚਾਰੀ ਰਾਜ ਬੀਮਾ ਨਿਗਮ ਵਲੋਂ ਮੈਡੀਕਲ ਜਾਂਚ ਕੈਂਪ

ਅਜੀਤ

शिविर में 189 बीमाधारकों का हैल्थ चैकअप किया

मैडीकल कैंप में जांचा 150 कर्मचारियों का स्वास्थ्य

खन्ना, 5 मार्च (कमल, लाडी): आज क्षेत्रीय कार्यालय कर्मचारी राज्य बीमा निगम के दिशा-निर्देशों पर स्थानीय बहादुर रोड स्थित लक्ष्मी स्टील रोलिंग मिल में एक जागरूकता एवं स्वास्थ्य जांच कैंप आयोजित किया गया, जिसका उद्घाटन ऑल इंडिया स्टील री रोलर्स एसोसिएशन (आईसा) के अध्यक्ष विनोद वशिष्ठ द्वारा किया गया। कैंप दौरान डा. प्रभजोत कौर तथा उनकी टीम द्वारा औद्योगिक इकाइयों में कार्य कर रहे बीमाकृत 150 से ज्यादा कर्मचारियों की जांच की गई। इस दौरान आईसा के अध्यक्ष विनोद वशिष्ट ने बताया कि ई.एस.आई. एक सामाजिक सुरक्षा अधिनियम है, जिसमें कोई भी कर्मचारी सेठ या अंशदान देकर अपनी जिंदगी को सुरक्षित कर सकता है।

उन्होंने बताया कि हादसे का शिकार हुए कर्मचारी को ई.एस.आई. द्वारा सभी प्रकार की मैडीकल सुविधा के साथ-साथ आर्थिक सहायता भी दी जाती है। उन्होंने बताया कि हर एक कर्मचारी व उद्योगपति को इसका लाभ जरूर लेना चाहिए और हर कर्मचारी को इसके अंतर्गत रजिस्टर्ड होना चाहिए। इस मौके मोनिका सेवक तथा ...... ने सबका धन्यवाद करते हुए किसी भी प्रकार की सहायता और सलाह लेने के लिए हर प्रकार से योगदान देने का भरोसा भी दिया। इस अवसर पर ब्रांच मैनेजर ई.एस.आई. फूल चंद, ... तथा अन्य उपस्थित थे।

कैंप दौरान कर्मचारियों की जांच करती हुई टीम, अध्यक्ष विनोद वशिष्ट व अन्य।

ईएसआई में स्वास्थ्य जांच शिविर लगाया

कैंप में कुल 104 लाभार्थियों ने लाभ उठाया

ਬੀਮਾ ਧਾਰਕਾਂ ਲਈ ਸਿਹਤ ਜਾਂਚ ਕੈਂਪ

बीमाकृत लोगों ने करवाई स्वास्थ्य की जांच

ट्राइडेंट में कर्मचारी राज्य बीमा निगम ने स्थापना दिवस पर मैडीकल कैंप लगाया

शिविर में जांचा लोगों का स्वास्थ्य

स्वास्थ्य जांच शिविर आज

अबोहर, 24 फरवरी (भास्कर): श्रम एवं रोजगार मंत्रालय भारत सरकार के कर्मचारी राज्य बीमा निगम के 68वें स्थापना दिवस पर जागरूकता शिविर व स्वास्थ्य जांच शिविर का आयोजन किया जा रहा है।

नवीन कुमार शाखा प्रबंधक ने बताया कि इस दौरान डा. ...... की बाह्य रोगी चिकित्सा अधिकारी अपनी टीम सहित बीमाकृत व्यक्तियों एवं उनके आश्रित परिवार के सदस्यों की स्वास्थ्य संबंधी जांच करेगी। शिविर दौरान राज्य बीमा निगम के मिलने वाले लाभों को अवगत करवाया जाएगा। उन्होंने बताया कि 25 फरवरी को प्रात: 9 से सायं 5 बजे तक ...... एवं दूसरा कैम्प 27 फरवरी को प्रात: 9 से सायं 5 बजे तक एस.आर.एम. डी.ए.वी. स्कूल हनुमानगढ़ रोड, अबोहर में

ਵਿਸ਼ੇਸ਼ ਪੰਦਰਵਾੜੇ ਤਹਿਤ ਸਿਹਤ ਜਾਂਚ ਕੈਂਪ ਲਾਇਆ

कर्मचारी राज्य बीमा निगम द्वारा बीमा धारकों के लिए विशेष जांच कैंप आज से

मालेरकोटला, 26 फरवरी (जहूर): कर्मचारी राज्य बीमा निगम के स्थापना दिवस को समर्पित 22 फरवरी से 10 मार्च तक निगम द्वारा मनाए जा रहे विशेष पखवाड़े दौरान बीमा धारक व्यक्तियों के लिए 27 फरवरी को संगरूर, 5 मार्च को मालेरकोटला और 6 मार्च को अहमदगढ़ में विशेष जांच कैंप लगाए जाएंगे जिनमें बीमा धारक व्यक्तियों की मैडीकल जांच की जाएगी और साथ ही कर्मचारी राज्य बीमा निगम की ओर से दी जाती सुविधाओं और सहूलियतों बारे भी अवगत करवाया जाएगा। उक्त जानकारी निगम के स्थानीय ब्रांच मैनेजर हरीश चंद्र ने दी। उन्होंने वर्करों को कैंप का लाभ लेने के लिए अपील की।

पंजाब केसरी

ਮੈਡੀਕਲ ਚੈਕਅੱਪ ਤੇ ਈਐਸਆਈ ਸਕੀਮਾਂ ਸਬੰਧੀ ਜਾਣਕਾਰੀ ਲਈ ਕੈਂਪ ਲਗਾਇਆ

कर्मचारी राज्य बीमा निगम ने बीमा सुविधाओं के बारे बताया

ਸਿਹਤ ਜਾਂਚ ਕੈਂਪ ਦਾ ਆਯੋਜਨ

नैक्टर लाइफ साइंस कंपनी में एसिक दिवस पर कैंप आयोजित

कैंप दौरान कर्मचारियों को स्वास्थ्य संबंधी पुस्तक वितरित करते अधिकारी।

डेराबस्सी (उज्ज्वल): डेराबस्सी बरवाला मार्ग पर स्थित नैक्टर लाइफ साइंस उद्योग में कर्मचारी राज्य बीमा निगम द्वारा एसिक दिवस के उपलक्ष्य में एसिक पखवाड़ा मनाया गया। इस दौरान ईएसआईसी के सह क्षेत्रीय निदेशक श्री आर गुनसेकरन के नेतृत्व में नेक्टर लाइफ साइंस लिमिटेड उद्योग में चिकित्सा कैंप का आयोजन किया गया। कैंप में गुनसेकरन, अमनदीप इन्सीर, एसएमओ द्वारा दौरा कर विशेष रूप से उद्योग के एजीएम टी के शर्मा, जीएम जतिंदर सिंह बेदी, मनीष बग्गा सीनियर मैनेजर, मनजीत सिंह मैनेजर की उपस्थिति में बीमा कृत व्यक्तियों की समस्याओं को सुना और उनका निवारण किया। इसके अलावा मौके पर ही कुछ बीमाकृत व्यक्तियों को स्वास्थ्य पुस्तिकाएं भी वितरित की। इस मौके कंपनी में एसिक दिवस के उपलक्ष्य में मिठाई भी बांटी गई साथ ही कैंप दौरान रणजीत कौर आईएमओ इंचार्ज सीएसआई डेराबस्सी व उनकी टीम द्वारा चिकित्सा शिविर लगाया गया जिसमें 122 बीमा कृत व्यक्तियों की जांच की गई। कैंप के आयोजन में जतिंद्र कुमार शाखा प्रबंधक, राम राज वर्मा सामाजिक सुरक्षा अधिकारी का विशेष योगदान रहा। इस मौके कंपनी के कई अन्य अधिकारी व कर्मचारी भी उपस्थित थे।

दैनिक सवेरा Wed, 04 March 2020 epaper.dainiksaveratimes.org/c/4

नियंत्रक कार्यालयों से प्राप्त समीक्षा रिपोर्टों में दिए गए निर्देशों का अनुपालन करें तथा अनुपालन रिपोर्ट भेजें।

राजभाषा
गतिविधियां

14 सितम्बर भारत का वो गौरवशाली दिन, जब हमने हिंदी को आधिकारिक रूप से राजभाषा के रूप में चुनते हुए एक अहम् निर्णय लिया था जो देश की एकता, अखंडता व विकास के लिए मील का पत्थर साबित हुआ। उसी गौरवशाालि दिन की स्मृति में हिन्दी दिवस के राजभाषा उत्सव की झलक–जहाँ हिन्दी है, गर्व है, उत्सव है और फिर से राजभाषा हिन्दी ही है...

राजभाषा पखवाड़ा तथा हिन्दी दिवस समारोह का आयोजन

मुख्यालय के निदेशानुसार राजभाषा के प्रचार व प्रसार के उद्देश्य को ध्यान में रखकर क्षेत्रीय कार्यालय, कर्मचारी राज्य बीमा निगम, चंडीगढ़ में दिनांक 01.09.2019 से 15.09.2019 तक **राजभाषा पखवाड़ा** मनाया गया। पखवाड़े के आरंभ होने से पहले ही परिपत्र जारी कर राजभाषा पखवाड़े का महत्व बताते हुए सभी अधिकारियों व कर्मचारियों से हिन्दी का अधिकाधिक प्रयोग करने व पखवाड़े के दौरान आयोजित की जाने वाली विभिन्न हिन्दी प्रतियोगिताओं में बढ़–चढ़कर हिस्सा लेने के लिए अनुरोध किया गया था। 01 सितम्बर को ही क्षेत्रीय कार्यालय परिसर में प्रमुख स्थानों पर राजभाषा पखवाड़े के संबंध में आकर्षक बैनर लगा दिए गए थे। राजभाषा कार्मिकों ने विभिन्न शाखाओं में संपर्क कर हिन्दी के अधिकाधिक प्रयोग के संबंध में कार्मिकों को सहयोग दिया। राजभाषा पखवाड़े के दौरान निम्नानुसार हिन्दी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया:–

क्रमांक	दिनांक	प्रतियोगिता
1.	03.09.2019	हिन्दी निबन्ध प्रतियोगिता
2.	05.09.2019	हिन्दी टिप्पण व आलेखन प्रतियोगिता
3.	09.09.2019	राजभाषा ज्ञान प्रतियोगिता
4.	12.09.2019	हिन्दी वाक् प्रतियोगिता

क्षेत्रीय कार्यालय के अधिकारियों व कर्मचारियों ने इन प्रतियोगिताओं में उत्साहपूर्वक भाग लिया।

हिन्दी दिवस समारोह –

क्षेत्रीय निदेशक श्री सुनील तनेजा की अध्यक्षता में दिनांक 16.09.2019 को हिन्दी दिवस समारोह का आयोजन किया गया। क्षेत्रीय कार्यालय के मनोरंजन क्लब में समारोह का आयोजन किया गया। प्रोफेसर नीरू, हिंदी विभाग, ओपन लर्निंग यूनिवर्सिटी स्कूल, पंजाब विश्वविद्यालय समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में सादर आमंत्रित की गई थी। समारोह का शुभारंभ पंचदीप प्रज्जवलन से किया गया। इसके उपरांत श्रीमती रेखा, सहायक, श्रीमती कृष्णा कुमारी, कनिष्ठ अनुवादक, श्रीमती तृप्ति दीक्षित, कनिष्ठ अनुवादक व सुश्री साक्षी शर्मा, प्रवर श्रेणी लिपिक द्वारा सरस्वती वंदना **'हे शारदे माँ, हे शारदे माँ, अज्ञानता से हमें तार दे माँ'** प्रस्तुत की गई। प्रार्थना गान के पश्चात् श्री राजेश शर्मा, उप निदेशक (राजभाषा) ने मुख्य अतिथि प्रोफेसर नीरू का समारोह में परिचय देते हुए उनकी गरिमामयी उपस्थिति के लिए आभार व्यक्त किया तथा उनकी विशिष्ट उपलब्धियों से उपस्थित कार्मिकों को अवगत करवाया। तत्पश्चात् क्षेत्रीय निदेशक महोदय ने पुष्पगुच्छ भेंट कर मुख्य अतिथि का स्वागत किया। इसके बाद श्रीमती सीमा रावत, सहायक निदेशक ने शॉल भेंट कर मुख्य अतिथि का सम्मान किया।

क्षेत्रीय निदेशक महोदय ने हिंदी दिवस के अवसर पर जारी माननीय गृह मंत्री तथा महानिदेशक महोदय की अपील को पढ़कर सुनाया। सभी ने इसे ध्यानपूर्वक संज्ञान में लिया। तत्पश्चात् श्री राजेश शर्मा, ने

राजभाषा शाखा द्वारा वर्ष के दौरान संचालित विभिन्न क्रियाकलापों तथा क्षेत्रीय कार्यालय, चण्डीगढ़ में वर्ष 2018–19 के दौरान राजभाषा कार्यान्वयन की स्थिति व उपलब्धियों पर पावर प्वाइंट प्रस्तुति दी। क्षेत्र में हिन्दी संबंधी कार्यों की सराहना करते हुए उन्होंने बताया कि मुख्यालय द्वारा क्षेत्रीय कार्यालय, पंजाब को वर्ष 2018–19 के लिए 'ख' क्षेत्र में श्रेष्ठतम राजभाषा कार्यान्वयन के लिए प्रथम पुरस्कार तथा उत्कृष्ट पत्रिका प्रकाशन के लिए द्वितीय पुरस्कार प्रदान किया गया है। उन्होंने मुख्यालय द्वारा राजभाषा सम्मेलन में प्रदान की गई 'शील्ड' तथा 'प्रमाण–पत्र' को विधिवत् रूप से क्षेत्रीय निदेशक महोदय को सौंपा। इस पर सभाकक्ष में उपस्थित जनसमूह ने जोरदार करतल ध्वनि से हर्ष व्यक्त किया।

क्षेत्रीय कार्यालय, पंजाब के कर्मचारियों द्वारा इस अवसर पर एक आकर्षक सांस्कृतिक कार्यक्रम भी प्रस्तुत किया गया। सांस्कृतिक कार्यक्रम का शुभारंभ श्री संजय दास, सामाजिक सुरक्षा अधिकारी की सुपुत्री सुश्री तोशानी द्वारा प्रस्तुत कत्थक नाट्य शैली में गणपति वंदना से किया गया। तत्पश्चात् सुश्री मेघना ककारिया, प्रवर श्रेणी लिपिक द्वारा 'चालान नहीं कटवाना है' कविता प्रस्तुत की गई। इसके बाद श्री दमनप्रीत सिंह सुपुत्र श्री हरविन्द्र सिंह, सहायक द्वारा एक गीत प्रस्तुत किया गया। तत्पश्चात् श्री बीरइंद्र सिंह भट्ट, प्रवर श्रेणी लिपिक, श्री दमनप्रीत सिंह सुपुत्र श्री हरविन्द्र सिंह, सहायक, श्री अमित बहादुर, सहायक द्वारा मधुर गीत प्रस्तुत किए गए। श्रीमती तृप्ति दीक्षित, कनिष्ठ अनुवादक व सुश्री साक्षी शर्मा, प्रवर श्रेणी लिपिक द्वारा नए–पुराने गानों के मुखड़ों से गीतमाला बनाकर प्रस्तुत की गई जिससे सभी श्रोता मंत्रमुग्ध हो झूम उठे।

सांस्कृतिक कार्यक्रम को विराम देते हुए हिन्दी प्रतियोगिताओं के पुरस्कार विजेताओं को क्षेत्रीय निदेशक महोदय तथा मुख्य अतिथि द्वारा पुरस्कार प्रदान किए गए तथा हिन्दी का अधिकाधिक प्रयोग करने पर 'अंतर्शाखायी राजभाषा चल शील्ड' इस बार भी 'सामान्य शाखा' को प्रदान की गई जिसे श्री राजेश शर्मा, शाखाधिकारी (सामान्य) तथा शाखा के अन्य कार्मिकों ने ग्रहण किया। मुख्य अतिथि तथा क्षेत्रीय निदेशक महोदय द्वारा सभी पुरस्कार विजेताओं को बधाई दी गई।

तत्पश्चात् मुख्य अतिथि प्रोफेसर नीरू को मंच पर आमंत्रित किया गया। उन्होंने अपने उद्‌बोधन में कहा कि आज पूरे देश में गौरवमयी राजभाषा उत्सव मनाया जा रहा है। आप सभी को हिंदी दिवस की शुभकामनाएं। मुझे भी आज आप सभी के साथ हिंदी दिवस मनाने का सुअवसर प्राप्त हुआ है। किसी कार्यालय में हिंदी दिवस को इतना हर्षोल्लास के साथ मनाते हुए पहली बार देख रही हूँ। बहुत अच्छा लग रहा है। कार्यालय को पूरे देश में राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में पुरस्कार मिलना यह आप सब लोगों की

हिंदी के प्रति निष्ठा को दर्शाता है और इस निष्ठा को देखकर मैं कह सकती हूँ कि हमारे देश में हिंदी की स्थिति मजबूत है। उन्होंने इस बात पर भी बल दिया कि हमें क्षेत्रीय भाषाओं की अस्मिता एवं अस्तित्व को संरक्षण प्रदान करते हुए हिंदी का विकास करना है। हमें दैनिक जीवन में हिंगलिश यानी हिंदी व अंग्रेजी के मिश्रित रूप के प्रयोग से बचना है। अंग्रेजी के शब्दों के स्थान पर हमें क्षेत्रीय भाषाओं के आम बोलचाल के शब्दों को हिंदी के साथ जोड़ना है ताकि क्षेत्रीय भाषाओं के साथ–साथ हिंदी का भी विकास हो सके। उन्होंने अपनी बात पर बल देते हुए कहा कि निःसंदेह हमारी भाषा और संस्कृति शास्वत है तथा विश्व में अनुकरणीय है। हमें अपनी भाषा और संस्कृति का संरक्षण व विकास करना चाहिए। यह हमारा नैतिक दायित्व है। साथ ही, कार्यालयीन कामकाज में भी हमें आसान हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग करना चाहिए। मुख्य अतिथि ने सभी पुरस्कार विजेताओं को बधाई दी। क्षेत्रीय निदेशक महोदय ने मुख्य अतिथि को स्मृति चिह्न भेंट किया तथा कार्यालय में मुख्य अतिथि के रूप में उनका निमंत्रण स्वीकार करने के लिए आभार व्यक्त किया।

इसके बाद राजभाषा शाखा में लगभग 15 वर्ष तक समर्पित सेवा प्रदान करके नवंबर 2019 में सेवानिवृत्त हाने जा रही श्रीमती हेमंती देवी, बहुकार्य स्टाफ को राजभाषा शाखा द्वारा स्मृति चिह्न देकर सम्मानित किया गया।

तत्पश्चात् श्री रजनीश चौधरी, सचिव, अधिकारी संघ तथा श्री वजीर सिंह, सचिव, एसिक संघ पंजाब ने इस अवसर पर अपने विचार रखे।

क्षेत्रीय निदेशक महोदय ने इस अवसर पर अपने उद्गार व्यक्त करते हुए कहा कि पंजाब क्षेत्र को श्रेष्ठतम कार्यान्वयन के लिए शील्ड मिलना गौरव की बात है। सभी अधिकारियों तथा कर्मचारियों को अपना अधिकाधिक कार्य हिंदी में करने की अपील करते हुए उन्होंने कहा कि राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा वाराणसी में दिनांक 09.02.2018 को आयोजित पुरस्कार वितरण समारोह में 'ख' क्षेत्र में श्रेष्ठतम कार्यान्वयन के लिए क्षेत्रीय कार्यालय, पंजाब को शील्ड प्रदान की जा चुकी है। हमें इस पुरस्कार को पुनः प्राप्त करने के भरसक प्रयास करने हैं। उन्होंनें श्री राजेश शर्मा से कहा कि वे हिंदी कार्यशालाओं में सभी कर्मचारियों को हिंदी ई–टूल्स की जानकारी निरंतर देते रहें ताकि सभी कर्मचारी इनका लाभ उठा सकें। उन्होंने सभी कर्मचारियों व अधिकारियों से पुनः आग्रह किया कि वे अपना सम्पूर्ण कार्य हिन्दी में ही करें तथा अपने स्तर पर राजभाषा संबंधी नियमों का अनुपालन सुनिश्चित करें।

धन्यवाद ज्ञापित करते हुए श्री एल.एन. मीणा, सहायक निदेशक ने समारोह के सफलतापूर्वक आयोजन के लिए सभी अधिकारियों व कर्मचारियों के सहयोग की सराहना की। समारोह के अंत में सभी को अल्पाहार वितरित किया गया तथा राष्ट्रगान के साथ समारोह का समापन किया गया ।

विभिन्न वार्षिक प्रोत्साहन योजनाओं/प्रतियोगिताओं का परिणाम

हिंदी श्रुतलेखन प्रोत्साहन योजना 2018-19

क्र.सं.	अधिकारी का नाम व पदनाम	पुरस्कार राशि
1.	श्री लक्ष्मी नारायण मीणा, सहायक निदेशक	रु 5000/–

मूल हिंदी टिप्पण-आलेखन प्रोत्साहन योजना 2018-19

क्र.सं.	कर्मचारी का नाम व पदनाम	वर्तमान तैनाती का स्थान	पुरस्कार	पुरस्कार राशि
1.	श्री हरजीत सिंह, प्रवर श्रेणी लिपिक	विधि शाखा	प्रथम	रु 5000/–
2.	श्री प्रदीप कुमार, प्रवर श्रेणी लिपिक	रोकड़ शाखा	प्रथम	रु 5000/–
3.	श्री भारत भूषण, सहायक	विधि शाखा	द्वितीय	रु 3000/–
4.	श्री रामयश, सहायक	राजस्व शाखा	द्वितीय	रु 3000/–
5.	श्री सुरेन्द्र सिह, सहायक	वसूली शाखा	द्वितीय	रु 3000/–
6.	श्रीमती उपासना, सहायक	वसूली शाखा	तृतीय	रु 2000/–

अंतर्शाखायी चल शील्ड प्रतियोगिता 2018-2019

सामान्य शाखा

राजभाषा पखवाड़ा 2019 के अंतर्गत आयोजित प्रतियोगिताओं का परिणाम

हिंदी निबंध प्रतियोगिता दिनांक 03.09.2019

क्र.सं.	अधिकारी/कर्मचारी का नाम व पदनाम	पुरस्कार
1.	श्री चन्द्र भूषण, सामाजिक सुरक्षा अधिकारी	प्रथम
2.	सुश्री मनीषा, प्रवर श्रेणी लिपिक	द्वितीय
3.	सुश्री कृतिका शर्मा, प्रवर श्रेणी लिपिक	तृतीय
4.	श्री पप्पू कुमार सिन्हा, प्रवर श्रेणी लिपिक	प्रोत्साहन–1
5.	श्री अमित बहादुर, सहायक	प्रोत्साहन–2

हिंदी टिप्पण एवं आलेखन प्रतियोगिता दिनांक : 05.09.2019

1.	श्री अमित बहादुर, सहायक	प्रथम
2.	सुश्री मनीषा, प्रवर श्रेणी लिपिक	द्वितीय
3.	श्री चन्द्र भूषण, सामाजिक सुरक्षा अधिकारी	तृतीय
4.	सुश्री कृतिका शर्मा, प्रवर श्रेणी लिपिक	प्रोत्साहन–1
5.	श्री प्रदीप कुमार, अवर श्रेणी लिपिक	प्रोत्साहन–2

राजभाषा ज्ञान प्रतियोगिता दिनांक : 09.09.2019

1.	सुश्री कृतिका शर्मा, प्रवर श्रेणी लिपिक	प्रथम
2.	सुश्री मनीषा, प्रवर श्रेणी लिपिक	द्वितीय
3.	श्री प्रेम वल्लभ, अवर श्रेणी लिपिक	तृतीय
4.	श्री भारत भूषण वालिया, सहायक	प्रोत्साहन–1
5.	श्री अमित बहादुर, सहायक	प्रोत्साहन–2

हिंदी वाक् प्रतियोगिता दिनांक :12.09.2019

1.	श्री एल.एन. मीणा, सहायक निदेशक	प्रथम
2.	श्री अमित बहादुर, सहायक	द्वितीय
3.	श्री दिनेश सिंह, सामाजिक सुरक्षा अधिकारी	तृतीय
4.	श्री भारत भूषण वालिया, सहायक	प्रोत्साहन–1
5.	श्री चन्द्र भूषण, सामाजिक सुरक्षा अधिकारी	प्रोत्साहन–2

हिंदी दिवस समारोह 2019 की झलकियाँ

हिंदी दिवस समारोह 2019 की झलकियाँ

नराकास (का.-1), चण्डीगढ़ के तत्वावधान में सदस्य कार्यालयों के राजभाषा कार्मिकों के लिए क्षेत्रीय कार्यालय, चण्डीगढ़ द्वारा आयोजित कार्यशाला की झलकियाँ

नराकास (का.-1), चण्डीगढ़ के तत्वावधान में सदस्य कार्यालयों के राजभाषा कार्मिकों के लिए क्षेत्रीय कार्यालय, चण्डीगढ़ द्वारा आयोजित कार्यशाला की झलकियाँ

आपका पत्र–हमारी प्रेरणा

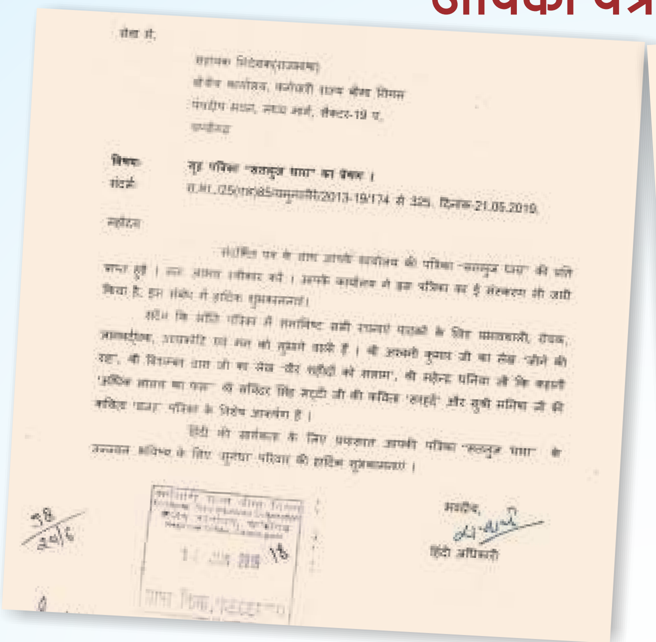

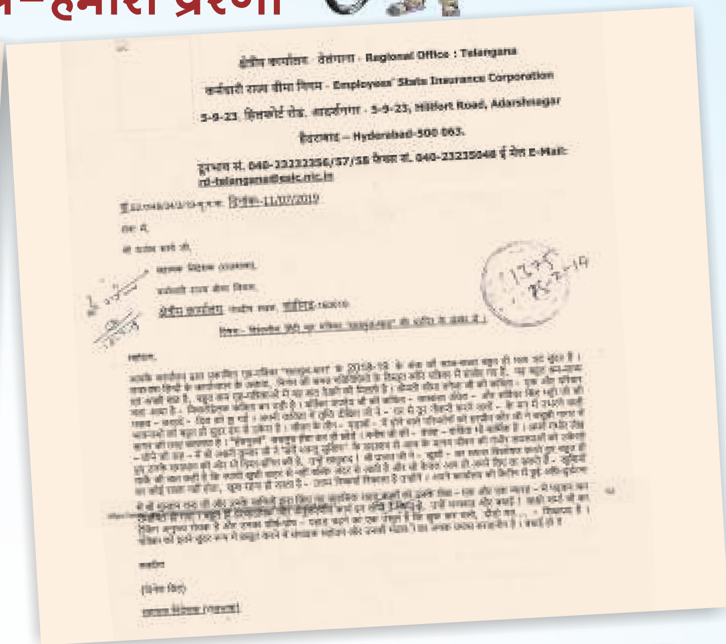

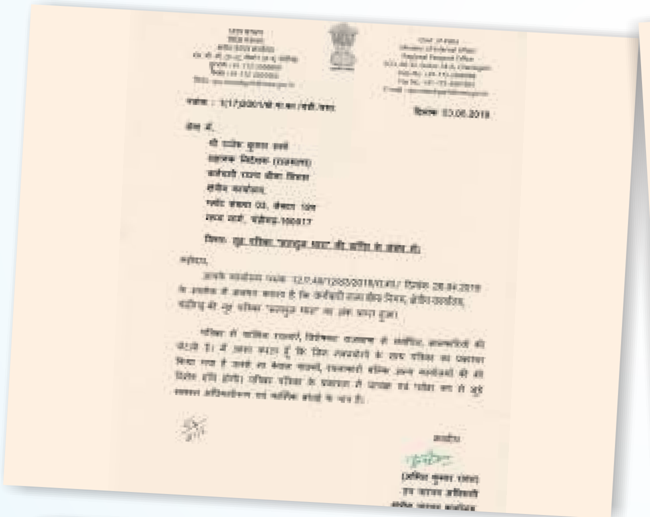

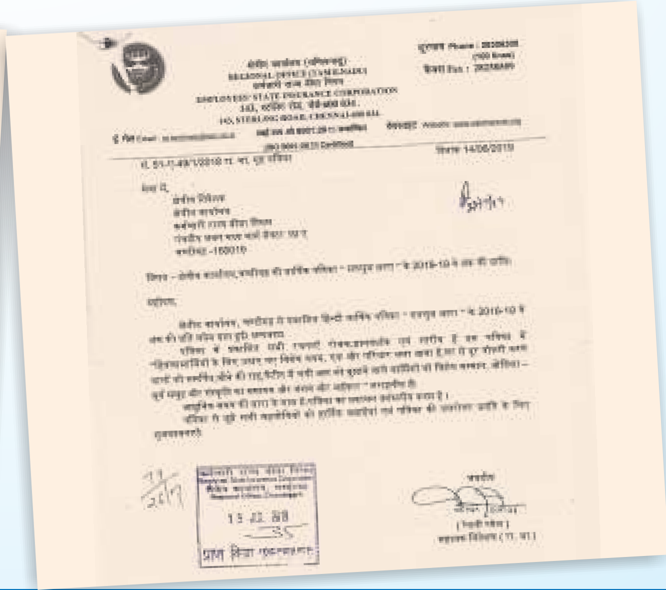

आपका पत्र–हमारी प्रेरणा

कर्मचारी राज्य बीमा निगम आदर्श अस्पताल
E.S.I. CORPORATION MODEL HOSPITAL,
INDUSTRIAL AREA, PHASE-II, RAMDARBAR, CHANDIGARH-160002

संख्या: 172 /11-50/13/2017/आ.अ.चंडी

दिनांक : 20/05/2019

प्राप्त किया/RECEIVED

लेजर वैली, चण्डीगढ़

ऑनलाइन पढ़ने/ डाउनलोड करने के लिए सामने दिए गए वेबलिंक का प्रयोग करें

क) ई–पत्रिकाः

ख) पीडीएफः

स्मार्टफोन/टेबलेट पर पढ़ने/डाउनलोड करने के लिए क्यूआर स्कैनर से सामने दिए गए क्यूआर कोड को स्कैन करें

ई–पत्रिका

पीडीएफ